सांध्य दैनिक
नई दृष्टिबिंदु
सच की शक्ति, जनता की दृष्टि
PRGI Reg No - CTHIN/25/A3746

सु-विचार
"इंसान का कठिन समय उसके लिए दर्पण की तरह होता है, जो उसे उसकी क्षमताओं का दर्शन कराता है...!!"
अज्ञात...

वर्ष–01 अंक–149 | संपादक आलोक तिवारी | दुर्ग, गुरूवार 18 जून 2026 | पृष्ठ 08 | मूल्य –2 रुपए

रावघाट रेल लाइन पर तकनीकी ट्रायल हुई शुरू, जुलाई तक यात्री सेवा की उम्मीद

58 बॉक्सन रेक से हुआ परीक्षण, 95 किमी परियोजना अंतिम चरण में, सुरक्षा स्वीकृति मिलने पर यात्री ट्रेन चलाने का रास्ता होगा साफ

नई दृष्टिबिंदु / दल्लीराजहरा

दल्लीराजहरा-रावघाट रेल परियोजना ने मंगलवार को बड़ी उपलब्धि हासिल की। रावघाट रेलखंड पर नियंत्रित गति और सीमित भार के साथ तकनीकी ट्रायल शुरू कर दिया गया। ट्रायल में 58 BOXN रेक का इस्तेमाल किया गया। यह परीक्षण विभिन्न चरणों में जारी रहेगा, जिसमें रेल लाइन की परिचालन क्षमता, संरचनात्मक सुरक्षा और तकनीकी मानकों की जांच होगी।

2008 में हुआ था एमओयू, 3800 करोड़ का निवेश

करीब 95 किमी लंबी इस परियोजना को सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र और भारतीय रेलवे मिलकर विकसित कर रहे हैं। 2008 में एमओयू के बाद शुरू हुई परियोजना पर सेल ने रेल लाइन निर्माण में करीब 1800 करोड़ रुपये और रावघाट परियोजना के समग्र विकास पर लगभग 2000 करोड़ रुपये का निवेश किया है। नक्सल प्रभावित दुर्गम इलाकों से गुजरने के कारण परियोजना को पूरा करना चुनौतीपूर्ण रहा।

जुलाई अंत तक पूरे होंगे स्टेशन के काम

आज रेल लाइन का अधिकांश काम पूरा हो चुका है। रावघाट स्टेशन भवन, यात्री सुविधाएं और सिग्नलिंग-दूरसंचार से जुड़े कार्य अंतिम चरण में हैं। जुलाई 2026 के अंत तक स्टेशन परिसर का काम पूरा होने की संभावना है। इसके बाद कमिश्नर ऑफ रेलवे सेफ्टी (सीआरएस) निरीक्षण करेंगे। सुरक्षा स्वीकृति मिलने पर यात्री ट्रेन चलाने का रास्ता साफ होगा।

बस्तर को मिलेगी बड़ी सौगात

रेलवे अधिकारियों के अनुसार अलग-अलग गति और भार में परीक्षण के बाद जरूरी अनुमतियां ली जाएंगी। 2022 में दल्लीराजहरा से तरोकी तक यात्री ट्रेन शुरू होने से क्षेत्र में शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर बढ़े हैं। रावघाट तक रेल पहुंचने से बस्तर के दूरस्थ इलाके देश के प्रमुख शहरों से सीधे जुड़ जाएंगे। स्थानीय लोगों को इस सेवा का लंबे समय से इंतजार है।

ओडिशा से मप्र ले जा रहे 17.5 किलो गांजा जब्त, दो गिरफ्तार

महासमुंद पुलिस ने कार सहित 9.38 लाख की संपत्ति की जब्त; महिला-बच्चों के साथ कर रहे थे तस्करी

नई दृष्टिबिंदु / महासमुंद

एंटी नारकोटिक टास्क फोर्स के निर्देश पर चल रही जांच के दौरान महासमुंद पुलिस को बड़ी सफलता मिली है। कोमाखान पुलिस ने ओडिशा से मध्यप्रदेश गांजा तस्करी कर रहे दो तस्करों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों के पास से 17.500 किलोग्राम गांजा कीमत 8.75 लाख रुपये बरामद हुआ है।

महिला-बच्चों की आड़ में कर रहे थे तस्करी

पुलिस अधीक्षक कार्यालय से मिली जानकारी के अनुसार मुखबिर की सटीक सूचना पर ग्राम टेमरी जांच नाका के पास टाटा इंडिका कार क्रमांक एमपी 04 सीबी 0848 को रोका गया। कार में दिनेश गिरी गोस्वामी, 35 वर्ष, निवासी जाखनोद थाना पोहरी जिला शिवपुरी और ललिता जाटव, 26 वर्ष, निवासी धुवानी जिला शिवपुरी बैठे थे। पूछताछ में दोनों ने कबूला कि वे भवानीपटना, ओडिशा से गांजा खरीदकर शिवपुरी में खपाने ले जा रहे थे। पुलिस को चकमा देने के लिए आरोपी महिला और बच्चों के साथ गांजा परिवहन कर रहा था।

कार-मोबाइल समेत 9.38 लाख की संपत्ति जब्त

पुलिस ने आरोपियों के कब्जे से 17.500 किलो गांजा कीमत 8,75,000 रुपये, कार कीमत 50,000 रुपये और 02 मोबाइल कीमत 13,000 रुपये जब्त किए हैं। कुल 9 लाख 38 हजार रुपये की संपत्ति जब्त की गई। आरोपियों के खिलाफ थाना कोमाखान में अपराध क्रमांक 92/2026 धारा 20(b)(ii)(b) एनडीपीएस एक्ट के तहत मामला दर्ज किया गया है।

जनवरी से अब तक 72 क्विंटल से ज्यादा गांजा जब्त

पुलिस ने बताया कि जिले में जनवरी 2026 से अब तक गांजा तस्करी के 103 प्रकरण दर्ज किए गए हैं। इनमें कुल 7225.351 किलो यानी 72 क्विंटल 25 किलो गांजा जब्त किया गया है, जिसकी कीमत करीब 36 करोड़ 02 लाख 64 हजार 950 रुपये है। इस दौरान 252 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया है। इनमें छत्तीसगढ़ के 62 और अन्य राज्यों के 190 आरोपी शामिल हैं।

पुलिस ने कहा कि एंटी नारकोटिक टास्क फोर्स के निर्देश पर अवैध मादक पदार्थों की तस्करी, परिवहन और बिक्री पर लगातार कार्रवाई की जा रही है। इंड टू इंड और फाइनेंशियल इन्वेस्टिगेशन पर भी जोर दिया जा रहा है।

रेत कारोबार पर खूनी संघर्ष : फॉर्च्यूनर में जिंदा जलाए गए पूर्व जनपद उपाध्यक्ष सहित 3 लोग

भाजपा से जुड़े दो गुटों में वर्चस्व की जंग, टिपर से टक्कर मार पेट्रोल डालकर लगाई आग

मृतक भरत सिंह उर्फ लल्ला | मृतक नागेंद्र सिंह | मृतक विरेंद्र सिंह | घायल योगेंद्र सिंह | घायल मयंक सिंह

नई दृष्टिबिंदु / बैकुंठपुर-सोहत

कोरिया जिले के सोनहत थाना क्षेत्र के ग्राम नौगई में मंगलवार रात रेत कारोबार और इलाके में वर्चस्व को लेकर भाजपा से जुड़े दो गुटों के बीच हुई हिंसक वारदात ने पूरे इलाके को दहला दिया। हमलावरों ने सोनहत जनपद के पूर्व उपाध्यक्ष भरत सिंह उर्फ लल्ला सिंह की फॉर्च्यूनर कार को पहले टिपर से टक्कर मारकर दरवाजे जाम किए, फिर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी। कार में सवार भरत सिंह, शिक्षक नागेंद्र सिंह और विरेंद्र सिंह की जलकर मौत हो गई। मयंक सिंह और योगेंद्र सिंह गंभीर रूप से झुलस गए हैं। दोनों का रायपुर में इलाज चल रहा है।

रेत ठेका और कमीशन बना खूनी रंजिश की वजह

मृतक भरत सिंह सोनहत जनपद के पूर्व उपाध्यक्ष थे। बैकुंठपुर महलपारा में भी उनका मकान है। कटगोड़ी से लगे नौगई में उनका पुराना मकान है। क्षेत्र में वे बड़े ठेकेदार और क्रशर कारोबारी के रूप में जाने जाते थे। हाल ही में उनके चचेरे भतीजे मयंक सिंह के नाम पर रेत का ठेका मिला था। वहीं गांव के ही दूसरे भाजपा नेता मनोज त्रिपाठी के डंपरों से रेत का परिवहन होता था। रेत घाट, अवैध खनन और कमीशन की हिस्सेदारी को लेकर दोनों पक्षों में महीनों से वर्चस्व की जंग चल रही थी। पहले भी दोनों पक्षों में झड़प हो चुकी थी और थाने में शिकायत दर्ज कराई गई थी।

एक दिन पहले भी दर्ज हुई थी FIR

रेत घाट को लेकर सोमवार को भी दोनों पक्षों में विवाद हुआ था। इसके बाद मनोज त्रिपाठी के भाई निशांत त्रिपाठी ने उत्कर्ष सिंह, लवकुश सिंह और मयंक सिंह के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई थी। इनमें लल्ला सिंह और उनके भाई के बेटे भी शामिल बताए जा रहे हैं। पुलिस इस मामले की भी जांच कर रही है।

सात पर नामजद केस, 4 हिरासत में

मुख्य आरोपी मनोज त्रिपाठी भी भाजपा से जुड़ा है। पुलिस ने मनोज त्रिपाठी, उसके बेटे और रिश्तेदारों समेत सात लोगों पर नामजद अपराध दर्ज किया है। वारदात में शामिल अक्षत त्रिपाठी, सत्यप्रकाश त्रिपाठी, मन्नू त्रिपाठी और विशाल त्रिपाठी को हिरासत में लिया गया है। मुख्य आरोपी मनोज त्रिपाठी फरार है। पुलिस का कहना है कि रेत के कारोबार में राजनीतिक संरक्षण के चलते यह वर्चस्व की लड़ाई खूनी संघर्ष में बदल गई।

आईजी पहुंचे गांव, इलाके में तनाव

वारदात की खबर पर सरगुजा आईजी दीपक कुमार झा देर रात ही गांव पहुंचे। घटना की गंभीरता को देखते हुए रात में ही आरोपियों की धरपकड़ शुरू की गई। नौगई समेत पूरे सोनहत क्षेत्र में तनाव का माहौल है। फोरेंसिक टीम मौके से साक्ष्य जुटा रही है। फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए उनके संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है। पुलिस सभी एंगल से मामले की जांच कर रही है।

ऐसे हुई वारदात : टिपर से मारी टक्कर, लाठी-डंडों से पीटा

पुलिस के मुताबिक 16 जून की रात करीब 11 बजे भरत सिंह अपने रिश्तेदारों और परिचितों के साथ तीन गाड़ियों में गांव जा रहे थे। इसी दौरान भाजपा नेता मनोज त्रिपाठी, उसके रिश्तेदारों और साथियों ने भरत सिंह की फॉर्च्यूनर को घेर लिया। आरोपियों ने टिपर से कई बार जोरदार टक्कर मारी, जिससे कार के दरवाजे जाम हो गए और कोई बाहर न निकल सके। इसके बाद कार पर पेट्रोल छिड़ककर आग लगा दी गई। जो लोग शीशा तोड़कर बाहर निकलने की कोशिश कर रहे थे, उन्हें बाहर खड़े आरोपियों ने लाठी-डंडों से बेरहमी से पीटा। आग की लपटों में घिरे भरत सिंह उर्फ लल्ला सिंह की कार के अंदर ही मौत हो गई। गंभीर रूप से झुलसे विरेंद्र सिंह ने अंबिकापुर के जीवन ज्योति अस्पताल में दम तोड़ दिया। उन पर धारदार हथियार से भी वार किया गया था। विरेंद्र रायपुर में एक निजी कंपनी में कार्यरत थे। तीसरे मृतक शिक्षक नागेंद्र सिंह भरत सिंह के रिश्ते में भाई लगते थे। मंगलवार को रायपुर ले जाते समय बिलासपुर के पास रास्ते में उनकी मौत हो गई। मयंक सिंह दूसरी गाड़ी में थे।

दल्लीराजहरा माइंस के सिलिका रिडक्शन प्लांट ने 20 लाख टन उत्पादन का आंकड़ा किया पार

393 दिनों में हासिल किए अगले 10 लाख टन, बीएसपी को मिलेगा उच्च गुणवत्ता वाला अयस्क

नई दृष्टिबिंदु / दल्लीराजहरा

सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के दल्ली मैकेनाइज्ड माइंस स्थित सिलिका रिडक्शन प्लांट (एसआरपी) ने 4 जून 2026 को 20 लाख टन संचयी उत्पादन का अहम माइलस्टोन हासिल कर लिया है। यह उपलब्धि लौह अयस्क संसाधनों के अधिकतम उपयोग की दिशा में बड़ा कदम है।

563 दिन में 10 लाख, फिर 393 दिन में अगले 10 लाख टन

सिलिका रिडक्शन प्लांट का उद्घाटन 23 जून 2023 को हुआ था और अक्टूबर 2023 से वाणिज्यिक उत्पादन शुरू हुआ। संयंत्र ने 7 मई 2025 को 563 दिनों में 10 लाख टन उत्पादन पूरा किया था। इसके बाद अगले 10 लाख टन का लक्ष्य मात्र 393 दिनों में हासिल कर लिया गया, जो बढ़ती उत्पादकता और परिचालन दक्षता को दर्शाता है।

निम्न श्रेणी के अयस्क का हो रहा उन्नयन

बेनीफिशिएशन प्लांट के नाम से भी जाने जाने वाले इस एसआरपी की स्थापना 1 एमएम से कम आकार के उच्च सिलिका युक्त लौह अयस्क फाइंस के उन्नयन के लिए की गई है। अत्याधुनिक तकनीक से अयस्क में सिलिका की मात्रा घटाकर भिलाई इस्पात संयंत्र के लिए उच्च गुणवत्ता वाला लौह अयस्क तैयार किया जाता है। छह दशक से अधिक पुराने दल्ली-राजहरा खदान क्षेत्र में अयस्क की गुणवत्ता में कमी को देखते हुए फाइंस का बेनीफिशिएशन जरूरी हो गया था, ताकि ब्लास्ट फर्नेस के लिए मानक अयस्क मिल सके।

हॉट मेटल उत्पादन और पर्यावरण दोनों को फायदा

उन्नत गुणवत्ता वाले अयस्क की आपूर्ति से भिलाई इस्पात संयंत्र के ब्लास्ट फर्नेसों में हॉट मेटल उत्पादन क्षमता बढ़ी है। साथ ही कोक की खपत घटी है, फर्नेस दक्षता बढ़ी है और कार्बन उत्सर्जन में भी कमी आई है। इस तरह एसआरपी सेल के सतत और पर्यावरण-अनुकूल इस्पात उत्पादन के लक्ष्य को मजबूती दे रहा है।

गुरु अर्जन देव जी के शहीदी दिवस पर लगी मीठे शरबत की छबील

यूथ सिख सेवा समिति व गुरुद्वारा संगत ने कोहका भिलाई में बांटा चने का प्रसाद

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

वाहेगुरु जी का खालसा, वाहेगुरु जी की फतेह। गुरु अर्जन देव जी के शहीदी दिवस के अवसर पर कोहका भिलाई स्थित बीरा जी के अंगना में मंगलवार को सेवा भाव से मीठे शरबत की छबील और चने के प्रसाद का वितरण किया गया।

यह सेवा यूथ सिख सेवा समिति के अध्यक्ष इंद्रजीत सिंह एवं गुरुद्वारा बाबा बुड्ढा साहिब जी कोहका की समूह साध संगत की ओर से की गई। भीषण गर्मी में राहगीरों, श्रद्धालुओं और आम नागरिकों ने मीठे शरबत से अपनी प्यास बुझाई और चने के प्रसाद का लाभ लिया। सेवादारों ने कहा कि गुरु अर्जन देव जी की शहादत त्याग, सेवा और मानवता का संदेश देती है। छबील लगाकर उनके बलिदान को याद किया गया और संगत ने गुरु के बताए सेवा मार्ग पर चलने का संकल्प लिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में श्रद्धालु व स्थानीय लोग मौजूद रहे और सेवा कार्य में सहयोग दिया।

पी.मुक्ता गुहामूर्ति को मिली पी-एच.डी की उपाधि

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

हेमचंद यादव विश्वविद्यालय दुर्ग द्वारा पी.मुक्ता गुहामूर्ति को पी-एच.डी की उपाधि प्रदान की गई है। शिक्षा विषय पर किए गए उनके शोध का विषय इंटरनेट गेम्स खेलने वाले किशारों के तनाव एवं आक्रामकता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभावह्व था। उनके शोध निर्देशक अपोलो कॉलेज अंजोरा के प्राध्यापक डॉ.रजत जैन एवं सहशोध निर्देशक कल्याण महाविद्यालय भिलाई के सहायक प्राध्यापक डॉ.आरती मिश्रा थे। वे रेलवे स्टेशन मास्टर पी.कृष्णामूर्ति की पत्नी, दिवंगत एमएस गुहा व स्वपना गुहा की पुत्री एवं मृणालकांति गुहा, सुनीता बर्मन, दिशी मलिक साहू की बहन है।

जिले में बिजली दर में बढ़ोतरी को लेकर कांग्रेस का हल्ला-बोल

बिजली ऑफिस का किया घेराव, मुख्यमंत्री साय का फूंका पुतला

अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर के नेतृत्व में भिलाई शहर जिला कांग्रेस कमेटी ने किया प्रदर्शन, अधीक्षण यंत्री को ज्ञापन सौंप समस्याओं के निराकरण की मांग की

नई दृष्टिबिंदु / दुर्ग-भिलाई

बिजली दर में अप्रत्याशित बढ़ोतरी, अव्यवस्थित विद्युत व्यवस्था एवं अनियमित बिजली कटौती के विरोध में भिलाई शहर जिला कांग्रेस कमेटी ने बुधवार को पावरहाउस स्थित बिजली ऑफिस का घेराव किया। पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं ने जमकर नारेबाजी की और अपना आक्रोश जताया। भारी संख्या में पुलिस बल की उपस्थिति में आक्रोशित कांग्रेसियों ने अंबेडकर चौक पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का पुतला दहन किया। इस दौरान भारी संख्या में तैनात पुलिस बल के साथ खींचातानी और झड़प भी हुई।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी द्वारा बिजली दर में अप्रत्याशित बढ़ोतरी को लेकर प्रदेशव्यापी आंदोलन किए जाने के आव्हान पर भिलाई शहर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर के नेतृत्व में पावरहाउस स्थित बिजली ऑफिस का घेराव किया गया। कमेटी के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं के साथ-साथ सैकड़ों की संख्या में आम जनता ने भी इस घेराव में कांग्रेस का साथ दिया। बिजली ऑफिस पहुंचकर कांग्रेसियों ने जमकर नारेबाजी की और बढ़ी हुई बिजली दर को तत्काल वापस लेने की मांग की। पदाधिकारियों ने बिजली ऑफिस के अधिकारियों से मिलने का प्रयास किया लेकिन उन्हें नहीं जाने दिया गया। काफी जद्दोजहद के बाद कमेटी का एक प्रतिनिधिमंडल अध्यक्ष श्री चंद्राकर के नेतृत्व में अधीक्षण यंत्री से मिला और उन्हें ज्ञापन सौंप।

ज्ञापन में बिजली दर में बढ़ोतरी को तत्काल वापस लेने, अवस्थित विद्युत व्यवस्था को सुधारने, अनियमित बिजली कटौती तत्काल बंद किए जाने एवं स्मार्ट मीटर न लगाए जाने की मांग की गई है। अधिकारियों ने आश्वस्त किया कि उनकी मांगों को गंभीरता से लिया जाएगा तथा जो भी परेशानियां हो रही हैं उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही उनकी मांगों से वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराया जाएगा।

यहां से कांग्रेसी अंबेडकर चौक, पावर हाउस पहुंचे। उनके हाथ में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का पुतला था। कांग्रेसियों को रोकने पुलिस बल की भारी संख्या में तैनाती की गई थी। वहीं बैरिकेट लगाकर उन्हें रोकने का इंतजाम किया गया था। पुलिस प्रशासन ने कांग्रेस के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को रोकने का पूरा प्रयास किया। इस दौरान दोनों पक्षों की बीच जमकर झूमा झटकी और खींचातानी हुई। आक्रोशित कांग्रेसियों ने बैरिकेट गिरा दिया और अंबेडकर चौक पहुंच मुख्यमंत्री का पुतला दहन कर दिया। इस दौरान कांग्रेसियों ने प्रदेश की भाजपा सरकार के विरुद्ध जमकर नारे लगाए।

घेराव एवं पुतला दहन के दौरान अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर ,भूपेंद्र यादव,सुश्री नीता लोधी, श्रीमती शशि सिन्हा,हीरा शंकर साहू,सीजू एंथोनी,जी राजू,नर्सिंग नाथ,रविंद्र सिंह,मोहन लाल साहू,प्रभाकर जनबंधु,पीयूष बारले,गोविंद कोसले, शोएब मोहम्मद खान,सौरभ दत्ता,गुड्डू खान,सौरभ मिश्रा, मधु चौबे,अली हुसैन सिद्दीकी अमित जैन,मो हबीब,मो रफीक,राजेश चौधरी,दिनेश गुप्ता,बलदेव मेहर,राजू कन्हाई,इंद्रजीत सैनी,चंदू चंदेल,अमरेश गिरी,शशिकांत,चंद्रशेखर पतले,सुरेश वर्मा,जोहन सिंह,चंद्रशेखर गंवाई,प्रमोद यादव,उज्जवल,दुर्गेश ताम्रकार,फारुख खान, ओम प्रकाश,शेख अकरम,रमाकांत देशलहरे,धनराज पराडे,दीदार भाई, डी आर चौधरी,सुरेश बॉक्सर,राजा,जय वर्मा,उमाशंकर साहू,देवेंद्र तिवारी,संदीप हिरवानी,श्रीकांत बारीक,बसंत कुमार साहू,दानवीर देवांगन,मंगल राम साहू,डॉ एस के साहू,अरविंद राय,बजरंगी लाल सिंह,राजकुमार देशमुख,केशव बंछोर,राजेंद्र रजक, डी कामराजू,सुयश साहू,दुर्गा प्रसाद साहू, लाडू राम सिन्हा,राजेंद्र प्रसाद,अजय कुमार,नितेश कुमार, सरसीज घोष,भुनेश्वरी रानी,शिखा राय,गिलोरी एंथोनी,पुष्पा,अंजुम निशा,विकाश दुबे,राजीव कुमार,संजीव कुमार सैमुअल,दिनेश वासनिक,आनंद डोंगरे,अमित सिंह,अमरजीत सिंह,छगन साहू,सुशील साहू,भानु साहू,गोवर्धन साहू,अनिल सिंह,तुषार कुमार,लक्ष्य शर्मा,अमन जीत साहू,दीपक साहू,आलोक शर्मा,तौहीद अंसारी,निखिल यादव,साबिर अहमद,सुयश साहू,विनय, दिनेश पटेल, रेखा देवी, जमुना ठाकुर, ममता यादव, संतोष दास, किरण नायडू, अशोक सिंहा, राजकुमार देशमुख, मोहनलाल साहू, चन्द्र कांत कोरे सहित सैकड़ों की संख्या में आसपास के नागरिक भी शामिल हुए।

कांग्रेस ने हमेशा लोगों के हित के लिए आवाज उठाई है : मुकेश चंद्राकर

अध्यक्ष मुकेश चंद्राकर ने कहा कि प्रदेश सरकार ने जिस तरह अप्रत्याशित ढंग से बिजली दर में बढ़ोतरी की है उससे आम जनता बेहद परेशान है। कांग्रेस की पूर्ववर्ती योजना "बिजली बिल हाफ योजना" में कटौती कर दी गई है जिसके कारण सामान्य से तीन से चार गुना ज्यादा बिजली बिल आ रहा है। स्मार्ट मीटर लगने के कारण भी बिजली बिल में बेतहाशा वृद्धि हुई है। साथ ही अनियमित रूप से जिस तरह बिजली कटौती की जा रही है उससे लोग हलाकन हो उठे हैं। कांग्रेस ने हमेशा लोगों के हित के लिए आवाज उठाई है। आज के कार्यक्रम में जनता का भरपूर सहयोग मिला। इससे साफ है कि लोग बिजली बिल में बढ़ोतरी से बेहद परेशान हैं।

बिजली बिल बढ़ोतरी : खैरागढ़ में सड़क पर उतरे कांग्रेस पुतला दहन के दौरान पुलिस के साथ हुई झुमा-झटकी

खैरागढ़। प्रदेश सरकार के द्वारा 1 जुलाई से बिजली की दरो की कि जा रही वृद्धि के विरोध में बुधवार को कांग्रेसीयो ने पिपरिया स्थिति कनिष्ठ कायर्पालन अभियंता कार्यालय विघुत विभाग के सामने धरना प्रदर्शन करते हुए मुख्यमंत्री विष्णु देव साय का पुतला दहन कर जोरदार प्रदर्शन किया।

प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आव्हान पर जिला कांग्रेस कमेटी के व्दारा विधायक सहित सभी जिला कांग्रेस पदाधिकारियों,ब्लाक कांग्रेस कमेटी, महिला कांग्रेस, युवक कांग्रेस सहित बड़ी संख्या में उपस्थित कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ पिपरिया स्थिति कनिष्ठ अभियंता विभाग के विघुत कार्यालय के सामने धरना प्रदर्शन किया। केंद्र में और प्रदेश में बैठी भाजपा सरकार के खिलाफ जमकर भडास निकाली ।बिजली बिल में कि जा रही बढ़ोतरी को आम जनता , किसानों और मध्यम वर्ग अतिरिक्त आर्थिक बोझ बताते हुए ,इसे तत्काल प्रभाव से वापस लेने की मांग की। प्रदेश सरकार के व्दारा नई दरें 1 जुलाई से लागू होगी।।जिसमें प्रदेश सरकार के द्वारा घरेलू उपभोक्ताओं के लिए 30/40 पैसे प्रति यूनिट , वही कृषि एवं सिंचाई पंपों के लिए भी 40 पैसे प्रति यूनिट तक वृद्धि की गई है।।इसी निर्णय के खिलाफ कांग्रेस सडक पर उतर आई है।

एक दिवसीय धरना प्रदर्शन में क्षेत्रीय विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा सहित जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कोमल दास साहू, पूर्व विधायक गिरवर जंघेल,शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अरूण भरद्वाज, ब्लाक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष संदीप सिरमौर, ब्लाक कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष छुईखदान रामकुमार पटेल,राजा गिरीराज किशोर दास, नगर पालिका परिषद के उपाध्यक्ष रज्जाक खान,ममता राजेश पाल, जिला महिला कांग्रेस अध्यक्ष आरती महोबिया, सज्जाक खान, भिखमचंद छाजेड़, आकाशदीप सिंह, रोहित पुल्सकर, संजू चंदेल, जितेन्द्र सिंह गौर, यतेन्द्र जीत सिंह, मनीष कोचर,अशोक साहू, माधो बंजारे, किसन रजक, रिंकू महोबिया,उतम जंघेल, रिंकू गुप्ता, आकाश सिंह "आशु",राजा सोलंकी,दवेन्द्र तोड़े,अवध वर्मा,कोमल वर्मा, हरीश वर्मा , रामावतार शर्मा, चंद्रेश वर्मा, चंद्रेश यदु, सुहैल खान "रानू" सहित बड़ी कांग्रेसी विघुत कार्यालय के सामने एकत्रित रहे।।

बिजली बिल की दरो में बढ़ोतरी कर सरकार ने लोगों पर एक और आर्थिक बोझ डाल दिया : यशोदा वर्मा

धरना प्रदर्शन को संबोधित करते हुए विधायक यशोदा नीलांबर वर्मा ने कहा कि महंगाई की मार झेल रही जनता और किसान पहले से ही पेट्रोल डीजल और रसोई गैस की बड़ी किमतो से परेशान हैं और अब बिजली बिल की दरो में बढ़ोतरी कर सरकार ने लोगों पर एक और आर्थिक बोझ डाल दिया है। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा सरकार आम लोगों और किसानों को कमजोर तथा बड़े उद्योगपतियों को मजबूत करने का काम कर रही है। भाजपा ने चुनाव के दौरान बिजली बिल आधा करने का वादा किया था। लेकिन सत्ता में आते ही अपने वादे से मुकर गई। आज लोगों के बिजली बिल पहले से ही दोगुनी तिगुनी आ रही है।।

यदि सरकार बिजली बिल की दरो में वृद्धि वापस नहीं लेती तो उग्र आंदोलन करेगी कांग्रेस :कोमल दास

जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष कोमल दास साहू ने कहा कि भाजपा सरकार लगातार किसानों , युवाओं और आम जनता को परेशान कर रही है। प्रदेश में खाद की कमी से किसान जुझ रहे हैं और आवश्यक वस्तुओं को के दाम लगातार बढ़ते जा रहे हैं। अब बिजली बिल कि दरों में बढ़ोतरी कर सरकार ने लोगों की मुश्किल और बढा दी है। उन्होंने चेतावनी दी है कि यदि सरकार बिजली बिल दर वृद्धि का फैसला वापस नहीं लेती तो कांग्रेस पार्टी के व्दारा आने वाले दिनों में उग्र आंदोलन किया जाएगा। सभा को राजा गिरीराज किशोर दास, रामकुमार पटेल, संदीप सिरमौर ने भी किया। संबोधित समाप्ति के बाद, कांग्रेसीयो ने "जनता अतिरिक्त बोझ डालना बंद करो","बिधुत दर वृद्धि वापस लेना होगा, लेना होगा", "जो सरकार निकम्मी है,वो सरकार बदलनी है", "भाजपा सरकार हाय-हाय के नारे लगाते हुए" विधुत कार्यालय कि ओर आगे बढे,जहा पर पहले से ही भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किए गए थे।

पिपरिया स्थिति विधुत विभाग के सामने भारी संख्या में पुलिस बल रहे तैनात

धरना प्रदर्शन को देखते हुए विघुत विभाग कार्यालय के सामने भारी संख्या में पुलिस बल तैनात किए गए थे और कार्यालय के मेन गेट को बंद कर दिया गया।

उसके बाद कांग्रेस कार्यकर्ताओं नारे बाजी शुरू कर दी "जब जब भाजपा डरती हैं, पुलिस को आगे करती हैं"।फिर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के पुतले का दहन किया गया ,उस समय स्थिति तनाव पूर्ण हो गई ।पुतले दहन के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ताओं और पुलिस के बिच पुतले को लेकर जमकर झुमा झटकी हुई, लेकिन पुलिस ने स्थिति को नियंत्रण में कर लिया।

प्रदर्शन और पुतला दहन के दौरान पूर्व विधायक अरुण वोरा के कहा

दुर्ग में बिजली दरों में की गई बेतहाशा वृद्धि के विरोध में आयोजित पुतला दहन कार्यक्रम के दौरान वरिष्ठ कांग्रेस नेता अरुण वोरा ने कहा कि भाजपा सरकार ने प्रदेश की आम जनता, किसानों, मजदूरों, कमर्चारियों और छोटे व्यापारियों पर महंगाई का एक और बोझ लाद दिया है। एक ओर लोग पहले से ही बढ़ती महंगाई से परेशान हैं, वहीं दूसरी ओर बिजली दरों में वृद्धि कर सरकार जनता की जेब पर सीधा हमला कर रही है।

उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार के समय हाफ बिजली बिल योजना के माध्यम से लाखों परिवारों को राहत प्रदान की गई थी, लेकिन भाजपा सरकार जनता को राहत देने के बजाय सुविधाएं छीनने का काम कर रही है। श्री वोरा ने कहा कि बिजली जैसी मूलभूत आवश्यकता पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डालना पूरी तरह जनविरोधी निर्णय है। कांग्रेस पार्टी इस निर्णय का पुरजोर विरोध करती है और मांग करती है कि बढ़ी हुई बिजली दरों को तत्काल वापस लिया जाए। जनता के हितों की रक्षा के लिए कांग्रेस का संघर्ष आगे भी लगातार जारी रहेगा।

कुंभकर्णी नींद में सोई भाजपा सरकार को जगाने कांग्रेस सड़क पर उतरी- अरुण वोरा

बिजली दर वृद्धि के खिलाफ यह आंदोलन जनता के हक की लड़ाई है

बालोद। भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने एक बार फिर जनता की जेब पर सीधा हमला किया है। लगातार बढ़ती बिजली दरों, स्मार्ट मीटर की मनमानी और बिजली उपभोक्ताओं पर अतिरिक्त आर्थिक बोझ डालकर भाजपा सरकार आम लोगों का जीवन कठिन बना रही है। प्रदेश में भाजपा सरकार बनने के बाद कई बार बिजली दरों में वृद्धि की जा चुकी है, जिससे किसान, मजदूर, मध्यम वर्ग और छोटे व्यवसायी सभी प्रभावित हुए हैं।

कांग्रेस सरकार के समय जनता को राहत देने के लिए हाफ बिजली बिल जैसी योजनाएं लागू थीं, लेकिन भाजपा सरकार राहत छीनने और बोझ बढ़ाने का काम कर रही है। बिजली जैसी मूलभूत आवश्यकता को आम नागरिकों की पहुंच से दूर किया जा रहा है।

इस अवसर पर संगीता सिन्हा, बालोद विधायक एवं प्रदेश महिला कांग्रेस अध्यक्ष, चंद्रेश हिरवानी, जिला कांग्रेस अध्यक्ष सहित बड़ी संख्या में कांग्रेसजन उपस्थित रहे। सभी नेताओं ने एक स्वर में बिजली दर वृद्धि वापस लेने, स्मार्ट मीटर की जबरन स्थापना पर रोक लगाने तथा उपभोक्ताओं को राहत प्रदान करने की मांग की।

कांग्रेस पार्टी जनता के हितों की रक्षा के लिए सड़क से सदन तक संघर्ष करेगी। बिजली दर वृद्धि वापस लेने, स्मार्ट मीटर की जबरन स्थापना रोकने और उपभोक्ताओं को राहत देने की मांग को लेकर कांग्रेस का आंदोलन लगातार जारी रहेगा। बालोद से हम भाजपा सरकार को चेतावनी देना चाहते हैं कि यदि जनता विरोधी फैसले वापस नहीं लिए गए तो कांग्रेस पूरे प्रदेश में जनआंदोलन को और तेज करेगी। जनता की आवाज को दबाया नहीं जा सकता और कांग्रेस हर वर्ग के साथ मजबूती से खड़ी है।

जनजातीय गौरव को सहेजते हुए विकास के नए आयाम गढ़ रही है सरकार : मुख्यमंत्री साय

अपनी जड़ों से जुड़कर आगे बढ़ेगा समाज , विकास में सरकार हर कदम पर साथ

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने गरियाबंद जिले के ग्राम दर्रापारा में अखिल भारतीय गोंडवाना गोंड महासभा केंद्रीय समिति बिन्द्रानवागढ़ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में 1 करोड़ 7 लाख रुपए की लागत से निर्मित कचना धुरवा गोंडवाना भवन का लोकार्पण किया। इस अवसर पर आदिवासी परंपरा के अनुरूप मुख्यमंत्री का पगड़ी पहनाकर एवं पीला चावल से तिलक लगाकर आत्मीय स्वागत किया गया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कार्यक्रम स्थल स्थित आदिवासी देवस्थल देवठाना में पारंपरिक विधि-विधान से पूजा-अर्चना कर प्रदेश की सुख-समृद्धि और खुशहाली की कामना की। उन्होंने एक पेड़ मां के नाम अभियान के अंतर्गत पीपल का पौधा रोपित कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। इस अवसर पर उपस्थित जनप्रतिनिधियों एवं समाज के प्रतिनिधियों ने भी वृक्षारोपण किया।

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कहा कि कचना धुरवा की यह पवित्र भूमि आदिवासी समाज की आस्था, संस्कृति और गौरवशाली विरासत का प्रतीक है। उन्होंने गोंडवाना भवन के निर्माण के लिए समाज को बधाई देते हुए कहा कि यह भवन सामाजिक, सांस्कृतिक, शैक्षणिक और सामुदायिक गतिविधियों का महत्वपूर्ण केंद्र बनेगा तथा नई पीढ़ी को अपनी संस्कृति और परंपराओं से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

मुख्यमंत्री ने कहा कि जनता के आशीर्वाद से बनी सरकार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी के अनुरूप निरंतर कार्य कर रही है। बीते ढाई वर्षों में गरीब, किसान, महिला, युवा और जनजातीय समाज के उत्थान के लिए अनेक ऐतिहासिक निर्णय लिए गए हैं। उन्होंने कहा कि सरकार का लक्ष्य विकास का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाना है। उन्होंने बताया कि प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत प्रदेश में 18 लाख गरीब परिवारों को आवास स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें 10 लाख 60 हजार से अधिक आवास पूर्ण हो चुके हैं। प्रतिदिन लगभग 1600 आवासों का निर्माण किया जा रहा है। किसानों को 3100 रुपए प्रति क्विंटल की दर से धान का मूल्य मिल रहा है, तेंदूपत्ता संग्राहकों को 5500 रुपए प्रति मानक बोरा की दर से भुगतान किया जा रहा है तथा महतारी वंदन योजना के तहत लगभग 70 लाख महिलाओं के खातों में प्रतिमाह एक हजार रुपए की राशि अंतरित की जा रही है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि एक समय गरियाबंद और बस्तर क्षेत्र नक्सलवाद की चुनौती से प्रभावित थे, लेकिन आज यहां शांति, सुरक्षा और विकास का वातावरण निर्मित हुआ है। मुख्यमंत्री ने मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076 का उल्लेख करते हुए कहा कि शासन की मंशा आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करना है। खाता विभाजन, नामांतरण, फौती, बिजली ट्रांसफार्मर सहित विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए प्रशासन लगातार कार्य कर रहा है।

मुख्यमंत्री की महत्वपूर्ण घोषणाएं

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने कचना धुरवा गोंडवाना भवन परिसर के विकास के लिए 63 लाख रुपए की घोषणाएं कीं। इनमें भवन की बाउंड्रीवाल निर्माण हेतु 27 लाख रुपए, छात्र-छात्राओं के लिए ग्रंथालय निर्माण हेतु 20 लाख रुपए, भगवान कचना धुरवा की प्रतिमा स्थापना हेतु 6 लाख रुपए तथा भवन के सौंदर्यीकरण हेतु 10 लाख रुपए की स्वीकृति शामिल है।

आदिम जाति तथा अनुसूचित जाति विकास मंत्री रामविचार नेताम ने कहा कि समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप लगभग ढाई एकड़ भूमि में यह भव्य भवन निर्मित किया गया है। उन्होंने कहा कि अपनी संस्कृति और परंपराओं को सुरक्षित रखते हुए समाज को शिक्षित, संगठित और आत्मनिर्भर बनाना समय की आवश्यकता है।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में डबल इंजन सरकार गरीबों, किसानों और जनजातीय समाज के उत्थान के लिए लगातार कार्य कर रही है। पीएम जनमन योजना के माध्यम से विशेष पिछड़ी जनजातियों तक बिजली, पानी, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएं पहुंचाई जा रही हैं। उन्होंने किसानों से प्राकृतिक एवं जैविक खेती को अपनाने का भी आह्वान किया।

कार्यक्रम में जिले के प्रभारी मंत्री एवं खाद्य मंत्री दयाल दास बघेल, सांसद श्रीमती रूपकुमारी चौधरी, राजिम विधायक रोहित साहू सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण, गोंड महासभा के पदाधिकारी, समाजजन, महिलाएं एवं बड़ी संख्या में युवा उपस्थित थे।

खास खबर

कोहका में अवैध पेट्रोल पंप के गड्ढे से हादसे का खतरा, बिजली पोल गिरने की आशंका, भाजपा नेता शारदा गुप्ता ने की शिकायत

नई दृष्टिबिंदु / भिलाई

कुरूद रोड कोहका में अवैध पेट्रोल पंप निर्माण के लिए खोदे गए 12 फीट गहरे गड्ढे से बड़ा हादसा होने की आशंका है। गड्ढा बिजली के पोल से सटाकर खोदा गया है, जिससे पोल की नींव कमजोर हो गई है। स्थानीय लोगों का कहना है कि कभी भी पोल गिर सकता है। पास में छोटे बच्चों का स्कूल होने से खतरा और बढ़ गया है।

कमिश्नर के मुआयने के बाद भी कार्रवाई नहीं : भाजपा प्रदेश संवाद प्रमुख झुग्गी झोपड़ी प्रकोष्ठ के संयोजक शारदा गुप्ता ने नगर निगम कमिश्नर से शिकायत की थी। कमिश्नर ने मौके का मुआयना भी किया, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई। प्रशासन ने अवैध पेट्रोल पंप निर्माण पर रोक तो लगाई है, मगर खोदे गए गड्ढे को नहीं भरा गया। रोड से सटा यह गड्ढा खुला पड़ा है। आशंका है कि कोई बस या वाहन इसमें गिरकर दुर्घटना का शिकार हो सकता है।

कलेक्टर-पीएमओ तक हो चुकी शिकायत : स्थानीय नागरिकों ने बताया कि कई बार शिकायत के बावजूद निवारण नहीं हुआ। कलेक्टर जनदर्शन और पीएमओ कार्यालय तक शिकायत की जा चुकी है। लोगों में नाराजगी है कि अधिकारी शायद किसी बड़ी दुर्घटना का इंतजार कर रहे हैं। खुले गड्ढे और कमजोर पोल से राहगीरों और आसपास के निवासियों की जान को खतरा है। बिजली आपूर्ति भी बाधित हो सकती है।

भाजपा नेता ने उठाई सुरक्षा की मांग : शारदा गुप्ता ने कहा कि बिजली पोल की सुरक्षा सुनिश्चित की जाए और जिम्मेदारों पर कड़ी कार्रवाई हो। बिना सुरक्षा मानकों के निर्माण कार्य जन सुरक्षा से खिलवाड़ है। प्रशासन से मांग की गई है कि संभावित दुर्घटना रोकने के लिए शीघ्र कार्रवाई करे।

इस मामले को लेकर जे आनंद, बसंत भारती, प्रशांत पासवान, सुगंधी वर्मा, निर्मल भारती, संतोष सोनी समेत निशु पांडे, विनोद उपाध्याय, कन्हैया सोनी, विरेन्द्र यादव, अनिल सिंह, सुभाष शर्मा, मदन सेन, पारस जंघेल, नितेश मिश्रा, विजय साहू और अन्य कार्यकर्ताओं ने भी प्रशासन से तत्काल कदम उठाने की मांग की है।

खेलो इंडिया सेंटर की बेटी ने बढ़ाया प्रदेश का मान, आवासीय खेल अकादमी रायपुर के लिए चयन

रायपुर। राज्य में खेल प्रतिभाओं को निखारने और उन्हें बेहतर मंच उपलब्ध कराने के प्रयास लगातार सकारात्मक परिणाम दे रहे हैं। इसी कड़ी में जिला सूरजपुर के खेलो इंडिया सेंटर हराटिकरा की एक प्रतिभावान बालिका खिलाड़ी का चयन आवासीय खेल अकादमी रायपुर के लिए हुआ है। यह उपलब्धि न केवल सूरजपुर जिले बल्कि पूरे प्रदेश के लिए गौरव का विषय है। ग्रामीण अंचल से निकलकर अपनी प्रतिभा, मेहनत और समर्पण के बल पर बालिका खिलाड़ी ने यह महत्वपूर्ण सफलता हासिल की है। उसके चयन से यह साबित हुआ है कि उचित मार्गदर्शन, नियमित प्रशिक्षण और अवसर मिलने पर प्रदेश की बेटियां किसी भी क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकती हैं।

इस अवसर पर कलेक्टर श्रीमती रेना जमील ने बालिका खिलाड़ी को फुटबॉल भेंट कर सम्मानित किया तथा उसके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उन्होंने कहा कि जिले की बेटियां खेल जगत में नई ऊंचाइयों को छू रही हैं और अपनी उपलब्धियों से अन्य बच्चों को भी प्रेरित कर रही हैं। उन्होंने खिलाड़ी को निरंतर मेहनत, अनुशासन और लगन के साथ आगे बढ़ते हुए राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर उत्कृष्ट प्रदर्शन करने के लिए प्रेरित किया। उल्लेखनीय है कि खेल एवं युवा कल्याण विभाग द्वारा संचालित खेलो इंडिया सेंटरों के माध्यम से प्रदेश के ग्रामीण एवं दूरस्थ क्षेत्रों में छिपी खेल प्रतिभाओं को खोजकर उन्हें व्यवस्थित प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है। इसके सकारात्मक परिणाम अब सामने आने लगे हैं और युवा खिलाड़ी राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में अपनी पहचान बना रहे हैं। बालिका खिलाड़ी के चयन से जिले में हर्ष का माहौल है। खेल एवं युवा कल्याण विभाग के अधिकारियों, प्रशिक्षकों एवं अभिभावकों ने इसे प्रदेश की खेल प्रतिभाओं के लिए प्रेरणादायक उपलब्धि बताते हुए खिलाड़ी को शुभकामनाएं दी हैं।

खेल प्रशिक्षण केन्द्र में निर्माण और मरम्मत के कार्यों में देरी पर भड़के उप मुख्यमंत्री साव

खिलाड़ियों को उत्कृष्ट सुविधाएं देने में लापरवाही बर्दाश्त नहीं, कार्यों में तेजी लाकर दें प्रगति रिपोर्ट

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

उप मुख्यमंत्री तथा खेल एवं युवा कल्याण मंत्री अरुण साव ने बिलासपुर में स्व. बीआर यादव राज्य खेल प्रशिक्षण केन्द्र बहतराई का औचक निरीक्षण कर निर्माण एवं मरम्मत कार्यों की धीमी प्रगति पर अधिकारियों और निर्माण एजेंसियों के प्रति कड़ी नाराजगी जताई। उन्होंने कहा कि खिलाड़ियों को बेहतर खेल सुविधाएं उपलब्ध कराना सरकार की प्राथमिकता है, इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने निरीक्षण के दौरान कार्यों को जल्दी पूरा करने, सुविधाएं बढ़ाने तथा प्रशिक्षण केंद्र की अधोसरंचना को मजबूत करने जिला प्रशासन, लोक निर्माण विभाग तथा खेल एवं युवा कल्याण विभाग के अधिकारियों को विस्तृत दिशा-निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने निरीक्षण के दौरान मैपलवुड फ्लोरिंग, तीरंदाजी मैदान, हॉकी गैलरी एवं फ्लड लाइट, कबड्डी इण्डोर व आउटडोर मैदान, एचव्हीएसी कार्य तथा आउटडोर स्टेडियम के कार्यों की प्रगति का जायजा लिया। उन्होंने अधिकारियों से हॉस्टल के रखरखाव की जानकारी लेते हुए नाराजगी व्यक्त की कि डीएमएफ मद से राशि उपलब्ध होने के बावजूद आवश्यक मेंटेनेंस कार्य समय पर नहीं किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि संसाधनों की उपलब्धता के बाद भी काम में देरी स्वीकार्य नहीं है।

उप मुख्यमंत्री ने कार्यों की धीमी गति पर नाखुशी जाहिर करते हुए अधिकारियों से कहा कि बिलासपुर प्रदेश का दूसरा सबसे बड़ा मुख्यालय है। यहां खिलाड़ियों की सुविधा बढ़ाने किए जा रहे कार्यों की गति बहुत धीमी है। उन्होंने लोक निर्माण विभाग के उप अभियंता, एसडीओ, कार्यपालन अभियंता एवं अन्य अधिकारियों को बेहतर समन्वय के साथ सभी कार्यों में तेजी लाते हुए इन्हें योजनाबद्ध तरीके से शीघ्र पूर्ण करने को कहा। उन्होंने संयुक्त बैठक कर लंबित कार्यों को जल्दी पूरा करने की कार्ययोजना बनाने तथा 15 दिनों के भीतर सभी निर्माण एवं मरम्मत कार्यों की वस्तुस्थिति के बारे में उप मुख्यमंत्री कार्यालय आकर प्रगति प्रतिवेदन प्रस्तुत करने के निर्देश कार्यपालन अभियंता बीबीएस गौतम को दिए।

श्री साव ने इण्डोर स्टेडियम में मैपलवुड फ्लोरिंग के लिए वर्ष 2017 में कार्यादेश जारी होने के बावजूद इसके अब तक अधूरे रहने पर लोक निर्माण विभाग के कार्यपालन अभियंता, अनुविभागीय अधिकारी तथा उप अभियंता पर गहरी नाराजगी व्यक्त करते हुए शीघ्र कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि इतने लंबे समय तक कार्यों का लंबित रहना गंभीर विषय है। सभी निर्माण कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण गुणवत्ता के साथ पूरे किए जाएं और उनकी नियमित मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने इण्डोर स्टेडियम में एच.व्ही.ए.सी कार्य के लिए अतिरिक्त राशि की जरूरत पर लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को प्राक्कलन तैयार करने के पहले स्थल का निरीक्षण करने के निर्देश दिए। उन्होंने एच.व्ही.ए.सी. कार्य तेजी से पूर्ण करने तथा डक्टिंग की पूर्ण रूप से सफाई करने को कहा। उन्होंने एस.ई.सी.एल. द्वारा दो करोड़ की लागत से बनाए जा रहे तीरंदाजी मैदान के निर्माण कार्य की प्रगति की समीक्षा के दौरान इसका निर्माण आगामी जुलाई तक पूर्ण कराने के निर्देश खेल एवं युवा कल्याण विभाग के सहायक संचालक ए. एक्का को दिए। उन्होंने आउटडोर स्टेडियम में स्थापित हाई मास्ट लाइट के तत्काल मरम्मत के भी निर्देश दिए।

उप मुख्यमंत्री श्री साव ने निरीक्षण के दौरान कहा कि बहतराई खेल प्रशिक्षण केन्द्र को उत्कृष्ट खेल प्रशिक्षण केन्द्र के रूप में विकसित करने खेल एवं युवा कल्याण विभाग खेल अधोसंरचना के सुदृढ़ीकरण, आधुनिक सुविधाओं के विस्तार और खिलाड़ियों के लिए बेहतर वातावरण उपलब्ध कराने के लिए लगातार कार्य कर रही है। उन्होंने अधिकारियों और निर्माण एजेंसियों को सभी कार्यों में तेजी लाते हुए समयबद्ध ढंग से पूरा करने को कहा, ताकि खिलाड़ियों को बेहतर प्रशिक्षण और खेल सुविधाओं का लाभ यथाशीघ्र मिल सके। इस दौरान विधायक सुशांत शुक्ला, कलेक्टर संजय अग्रवाल, नगर निगम के आयुक्त प्रकाश कुमार सर्वे और जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी संदीप अग्रवाल भी श्री साव के निरीक्षण के दौरान मौजूद थे।

बिना लाइसेंस खाद-बीज बेचने का मामला, गोदाम सील, उर्वरक और बीज जब्त

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

खरीफ सीजन में किसानों को गुणवत्तापूर्ण खाद-बीज उपलब्ध कराने और अवैध कारोबार पर अंकुश लगाने के लिए जिला प्रशासन बलौदाबाजार द्वारा लगातार कार्रवाई की जा रही है। जिलेभर में कृषि केंद्रों पर चलाए जा रहे सघन जांच अभियान के तहत बुधवार को बिना लाइसेंस खाद और बीज बेचने के मामले में एक गोदाम सील कर बड़ी मात्रा में उर्वरक और बीज जब्त किए गए।

बलौदाबाजार विकासखंड के ग्राम सरखोर स्थित गोवर्धन कृषि केंद्र के औचक निरीक्षण में पाया गया कि संचालक चंदाराम वर्मा बिना वैध अनुज्ञप्ति के किसानों को बीज और उर्वरकों का विक्रय कर रहे थे। उनके पास केवल कीटनाशक विक्रय का लाइसेंस था। जांच के दौरान यह भी पता चला कि विकास ट्रेडर्स के नाम से संचालित एक अन्य गोदाम में 7.75 मीट्रिक टन उर्वरक का अवैध भंडारण किया गया था, जबकि गोवर्धन कृषि केंद्र के गोदाम में 12.5 क्विंटल बीज भी बिना अनुमति के रखा गया था। प्रशासन ने इसे उर्वरक नियंत्रण आदेश, 1985, बीज नियंत्रण आदेश, 1983 तथा आवश्यक वस्तु अधिनियम का उल्लंघन मानते हुए तत्काल 7.75 मीट्रिक टन उर्वरक और 12.5 क्विंटल बीज जब्त कर गोदाम सील कर दिया और संचालक को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

पलारी विकासखंड के ग्राम देवसुन्द्रा में किसानों से मिली सूचना पर प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई की। सूचना थी कि कुछ लोग पिकअप वाहन से रायपुर से खाद लाकर किसानों को बेच रहे हैं। तहसीलदार ईश्वर केंवट और निरीक्षक सुचिन वर्मा मौके पर पहुंचे। हालांकि संबंधित व्यक्ति मौके से फरार हो गया। वाहन की तलाशी में पुलकित बायो फर्टिलाइजर प्राइवेट लिमिटेड, गुरुग्राम (हरियाणा) का 13 बोरी दानेदार सॉयल कंडीशनर और 12 बोतल ह्यूमिक एसिड बरामद कर जब्त किया गया। प्रारंभिक जानकारी के अनुसार, यह सामग्री किसानों को 1,400 रुपये प्रति बोरी की दर से बेची जा रही थी। अधिकारियों ने बताया कि खाद की पैकिंग और दाने डीएपी जैसे बनाए गए थे, ताकि किसानों को भ्रमित कर आसानी से बेचा जा सके। मामले में उर्वरक नियंत्रण आदेश, 1985 और आवश्यक वस्तु अधिनियम के तहत कार्रवाई की जा रही है। जिला स्तरीय उड़नदस्ता दल ने कसडोल में संचालित जोगी कृषि केंद्र और आचार्य कृषि सेवा केंद्र के निरीक्षण के दौरान दोनों केंद्रों पर पीओएस मशीन में दर्ज स्टॉक और भौतिक रूप से उपलब्ध स्टॉक में अंतर पाया गया। इस अनियमितता पर दोनों विक्रेताओं को कारण बताओ नोटिस जारी किया गया है।

मुकेश चंद्राकर हत्याकांड : गवाहों को रिश्वत का आरोप, पत्रकारों ने एसपी से की शिकायत

बयान बदलने के लिए 1 लाख का प्रलोभन देने का दावा, एसपी से निष्पक्ष जांच की मांग

नई दृष्टिबिंदु / बीजापुर

चर्चित पत्रकार मुकेश चंद्राकर हत्याकांड में गवाहों को प्रभावित करने का मामला सामने आया है। पत्रकार चेतन कापे वार और पवन दुर्गम ने पुलिस अधीक्षक बीजापुर को लिखित शिकायत देकर आरोप लगाया कि मुख्य गवाहों को धन और अन्य प्रलोभन देकर बयान बदलवाने की कोशिश की जा रही है।

एक लाख रुपये देने का आरोप

शिकायत में कहा गया कि बीजापुर निवासी सुनील मसकीले ने पत्रकार चेतन कोपवार से मोबाइल पर संपर्क कर मुख्य आरोपी सुरेश चंद्राकर के पक्ष में बयान देने के बदले एक लाख रुपये का प्रलोभन दिया। बातचीत में पत्रकार पवन दुर्गम का नाम भी लिया गया। आवेदन में उल्लेख है कि पवन दुर्गम का बयान देवाड़ा न्यायालय में पहले ही दर्ज हो चुका है, जो मुकेश चंद्राकर के पक्ष और आरोपियों के खिलाफ है।

न्यायिक प्रक्रिया प्रभावित करने का आरोप

पत्रकारों ने कहा कि गवाहों को अलग-अलग धनराशि देकर बयान बदलवाने की कोशिश न्यायिक प्रक्रिया को प्रभावित करने और निष्पक्ष जांच में बाधा डालने का गंभीर प्रयास है। गवाहों पर दबाव, धमकी या प्रलोभन देना कानूनन अपराध है। शिकायतकर्ताओं ने एसपी से मामले की निष्पक्ष जांच, दोषियों पर वैधानिक कार्रवाई और गवाहों की सुरक्षा सुनिश्चित करने की मांग की है, ताकि वे बिना भय या दबाव के अपना पक्ष रख सकें।

3 जनवरी को मिला था शव, चार आरोपी गिरफ्तार

पत्रकार मुकेश चंद्राकर का शव 3 जनवरी को ठेकेदार सुरेश चंद्राकर के बाड़े के सेप्टिक टैंक से बरामद हुआ था। इस मामले में सुरेश चंद्राकर, रितेश चंद्राकर, दिनेश चंद्राकर और महेंद्र रामटेके की गिरफ्तारी हो चुकी है। शुरुआती जांच में पुलिस ने पाया कि दो लोगों ने मिलकर हत्या की थी। सुरेश चंद्राकर को हत्या का मुख्य मास्टरमाइंड माना गया। मुकेश ने कुछ दिन पहले सुरेश के गुणवत्ताविहीन निर्माण कार्य के खिलाफ खबर दिखाई थी।

भाइयों संग रची थी साजिश

एसआईटी अधिकारियों के अनुसार, सुरेश ने चार दिन पहले भाइयों के साथ मिलकर हत्या की साजिश रची थी। आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए छत्तीसगढ़ के साथ महाराष्ट्र और तेलंगाना पुलिस को भी अभियान में शामिल किया गया था। सुरेश की चार गाड़ियां और हत्या के बाद प्रयुक्त एजेक्स मशीन भी जब्त की गई हैं।

---

10 लाख की लूट का खुलासा, कंपनी का कर्मचारी ही निकला मास्टरमाइंड

9.70 लाख नकद बरामद, फरार दो साथियों की तलाश जारी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मंदिर हसौद थाना क्षेत्र में हुई 10 लाख रुपये की लूट का पुलिस ने 24 घंटे के भीतर खुलासा कर दिया है। इस वारदात का मास्टरमाइंड कंपनी में ऑफिस बॉय का काम करने वाला कर्मचारी दिनेश राव ही निकला। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 9,70,000 रुपये नकद, बगर्मेन वाहन और मोबाइल समेत कुल 10,80,000 रुपये का मशरूका जब्त किया है।

ऐसे दिया वारदात को अंजाम

प्रार्थी अतुल अग्रवाल का समता कॉलोनी में कंस्ट्रक्शन कंपनी का कार्यालय है। 16 जून को कमर्चारी विद्यासागर डहरिया मजदूरों के भुगतान के लिए 10 लाख रुपये बैग में लेकर बाइक से सेक्टर-26, नया रायपुर जा रहा था। शाम करीब 6:17 बजे सेरीखेड़ी ओवरब्रिज के पास स्कार्फ से मुंह ढके दो बाइक सवारों ने चाकू दिखाकर बैग लूट लिया और फरार हो गए। रिपोर्ट पर थाना मंदिर हसौद में अपराध क्रमांक 286/26 धारा 309(4), 3(5) बीएनएस के तहत केस दर्ज हुआ।

एक माह पहले रची थी साजिश

पुलिस उपायुक्त स्मृतिक राजनाला और पुलिस अधीक्षक श्वेता श्रीवास्तव सिन्हा के निर्देशन में एंटी क्राइम एंड साइबर यूनिट व थाना पुलिस की संयुक्त टीम ने जांच शुरू की। सीसीटीवी फुटेज और तकनीकी विश्लेषण में कंपनी के कमर्चारी दिनेश राव की गतिविधियां संदिग्ध मिलीं। कड़ाई से पूछताछ में उसने जुर्म कबूल किया।

दिनेश राव 2022 से कंपनी में ऑफिस बॉय था। उसे नगदी के लाने-ले जाने की जानकारी थी। आरोपी ने बताया कि प्रार्थी पर बैंक का 20 लाख का कर्ज था। इसी का फायदा उठाकर उसने एक माह पहले लूट की योजना बनाई। इसमें अपने बुआ के बेटे और उसके एक साथी को शामिल किया।

अमलेश्वर में बांटी रकम

घटना वाले दिन दिनेश ने विद्यासागर का पीछा किया और फोन कर भाई को बुलाया। भाई और उसके साथी ने चाकू दिखाकर लूट की। वारदात के बाद तीनों अमलेश्वर में मिले। दिनेश ने दोनों को 30,000 रुपये दिए और 9,70,000 रुपये खुद रख लिए।

आरोपी गिरफ्तार, दो फरार

पुलिस ने दिनेश राव, 22 वर्ष, निवासी ग्राम सिरौलमू थाना छत्तरपुर बरमपुर जिला गंजाम, उड़ीसा, हाल-चौबे कॉलोनी प्रगति कॉलेज के पास, सरस्वती नगर रायपुर को गिरफ्तार किया है। फरार दो आरोपियों की तलाश जारी है। पुलिस का दावा है कि जल्द ही उन्हें भी गिरफ्तार कर लिया जाएगा।

लोक निर्माण विभाग के सचिव ने निर्माणाधीन राष्ट्रीय राजमार्ग व रतनपुर बायपास का किया निरीक्षण

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर-बिलासपुर

लोक निर्माण विभाग के सचिव मुकेश कुमार बंसल ने बिलासपुर जिले में निर्माणाधीन सड़क परियोजनाओं का निरीक्षण कर कार्यों की प्रगति एवं गुणवत्ता की समीक्षा की। इस दौरान उनके साथ लोक निर्माण विभाग के ईएनसी वीके भतपहरी, मुख्य अभियंता आरके रात्रे, मुख्य अभियंता राष्ट्रीय राजमार्ग ज्ञानेश्वर कश्यप, मुख्य अभियंता ईएंडएम जीएस मंडावी, अधीक्षण अभियंता केपी संत एवं एनके लाल सहित विभागीय अधिकारी एवं ठेकेदार मौजूद थे।

निरीक्षण के दौरान सचिव ने राष्ट्रीय राजमार्ग डिवीजन द्वारा रतनपुर से कबीर चौरा तक निर्मित की जा रही सड़क का अवलोकन किया। लगभग 510 करोड़ रुपये की लागत से 97 किलोमीटर लंबी इस महत्वपूर्ण सड़क परियोजना का निर्माण कार्य प्रगति पर है। परियोजना पूर्ण होने पर बिलासपुर, रतनपुर, कोटा, पेंड्रा और गौरेला क्षेत्र के बीच आवागमन अधिक सुगम होगा तथा यात्रियों को बेहतर और सुरक्षित सड़क सुविधा उपलब्ध होगी। इसके साथ ही व्यापारिक गतिविधियों एवं क्षेत्रीय विकास को भी गति मिलेगी। श्री बंसल ने इस प्रकल्प के तहत बन रहे लगभग 7 किलोमीटर लंबे रतनपुर बायपास सड़क का भी निरीक्षण किया। यह बायपास रतनपुर नगर में भारी वाहनों के दबाव को कम करने, यातायात को सुचारू बनाने तथा दुर्घटनाओं की संभावना को घटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

उन्होंने विभागीय अधिकारियों को निर्धारित मानकों के अनुरूप कार्य पूर्ण होने तक भुगतान को रोक कर रखने के निर्देश दिए। उन्होंने लोक निर्माण विभाग के अधिकारियों को जिला प्रशासन के साथ समन्वय स्थापित कर भू-अर्जन के लंबित प्रकरणों का शीघ्र निराकरण सुनिश्चित करने को कहा, ताकि परियोजना निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण की जा सके। उन्होंने अधिकारियों को निर्माण कार्यों की गुणवत्ता और समयबद्धता पर विशेष ध्यान देने के लिए निर्देशित करते हुए कहा कि सड़क परियोजनाएं क्षेत्र के विकास और जनसुविधा से सीधे जुड़ी हैं। इसलिए सभी कार्य निर्धारित तकनीकी मानकों के अनुरूप उच्च गुणवत्ता के साथ समय पर पूर्ण किए जाएं, ताकि आम नागरिकों को इनका अधिकतम लाभ मिल सके।

संपादकीय

युध्द कोई जीता नहीं, नुकसान सबका हुआ

वह जमाना गया जब दो देशों के बीच युध्द हो तो युध्द में एक देश जीतता था और एक देश हारता था। एक खुद को विजयी मानता था और दूसरा खुद को पराजित स्वीकार करता था। पराजित देश को विजयी देश की कई शर्तें माननी पड़ती थी। 2021 के दशक में युध्द का स्वरूप बदल गया है। इसका पता रूस-यूक्रेन व अमरीका-ईरान युध्द से चलता है। अब दो देशों के बीच युध्द शुरू हुआ तो वह कब समाप्त होगा कोई यह बता नहीं सकता। रूस-यूक्रेन युध्द कई साल से चल रहे हैं और दोनो देश चाहें तो कई साल तक चल सकते हैं क्योंकि युध्द अब मैदान में नहीं लड़े जाते हैं,जो युध्द मैदान में लड़े जाते थे,उसमें कुछ दिनों या कुछ महीनों में हार जीत का फैसला हो जाता था। अब तो ड्रोन व मिसाइलों से युध्द लड़े जाते हैं। एक दिन एक देश हमला करता है, एक दिन दूसरा देश हमला करता है। हमले होते रहते हैं, एक दूसरे को नुकसान पहुंचाने का दावा किया जाता है लेकिन हार जीत नहीं होती है। अमरीका व ईरान युध्द में भी ऐसा ही हुआ है। कोई जीता नहीं है और कोई हारा नहीं है। दोनों लड़ते लड़ते थक गए थे इसलिए शांति चाहते थे लेकिन अपनी शर्तों पर शांति चाहते थे। यही वजह है कि शांति की कोशिशें होती रही हैं लेकिन रिजल्ट नहीं निकल रहा है। शांति के लिए बातचीत होती रही और इसका परिणाम अब जाकर शांति के रूप में आया है।

ईरान व अमरीका के बीच आखिर 107 दिन के बाद लड़ाई बंद हो गई है। 15 जून को अमरीका व ईरान ने डील के एमओयू पर हस्ताक्षर कर दिए हैं। जिनेवा में 19 जून को औपचारिक हस्ताक्षर वाला कार्यक्रम होगा ।शांति के लिए शुरुआत हो गई है ।अभी कई बिंदुओं पर दोनों पक्षों के बीच 60 दिन तक बातचीत होगी। उसके बाद जो समझौता होगा वह अंतिम समझौता होगा ।दोनों देशों के बीच युध्द खत्म होने तथा शांति समझौते का पूरी दुनिया इंतजार कर रही थी। दोनों देशों के बीच युध्द के कारण पूरी दुनिया में तेल व ईंधन के दाम बढ़ गए हैं और सब इंतजार कर रहे थे कि युध्द समाप्त हो तो सभी देशों को महंगाई से राहत मिले ।दोनों देशों के बीच युध्द समाप्त होने का सभी देशों ने स्वागत किया है। सब चाहते थे कि दोनो देशों के बीच जो भी समस्या है, उसका हल बातचीत के जरिए निकाला जाए क्योंकि सब मानते हैं युद्ध से किसी समस्या का हल नहीं होता है सिर्फ नुकसान होता है. लड़ने वाले देशों का भी नुकसान होता है और बाकी देशों का भी नुकसान होता है।

दोनों देशों के बीच आखिर युध्द समाप्त हुआ तो बातचीत के जरिए ही हुआ। बातचीत का यह सिलसिला युध्द शुरू होने के बाद ही शुरू कर दिया गया होता 100 दिन तक पूरी दुनिया को जो परेशानी हुई है नहीं हुई होती। अमरीका को वहम था कि वह कुछ दिन में युध्द समाप्त कर ईरान को घुटनों पर ले आएगा लेकिन 100 दिन बाद भी अमरीका ईरान को घुटनों पर नही ला सका, उसे खुद ईरान का शर्तें माननी पड़ी जो वह सामान्य स्थिति में कभी नही मानता क्योंकि युध्द से ट्रंप को अमरीका की अंदरूनी राजनीति में नुकसान हो रहा था और आने वाले दिनों में और ज्यादा राजनीतिक नुकसान होता इसलिए ट्रंप जल्द युध्द समाप्त करना चाहते थे, ऐसा तब ही होता जब ट्रंप ईरान की शर्तें मानते। हार जीत की कसौटी पर इस युध्द को देखा जाए तो हार तो ट्रंप की हुई है क्योंकि वह सबसे शक्तिशाली देश है लेकिन उसे ईरान की कुछ बातें माननी पड़ी है, इसे ईरान की जीत व अमरीका की हार माना जा सकता है। अमरीका ईरान में जो करना चाहता था वह 100 दिन में नहीं कर सका है और ईरान जो चाहता था वह सौ दिन में हासिल करने में सफल रहा है।

डील के 14 पाइंट को देखने पर साफ हो जाता है कि ईरान ने अमरीका का झुकने पर मजबूर कर दिया है। डील के मुताबिक ईरान,लेबनान व अन्य मोर्चों पर युध्द बंद होगा,अमरीका ईरान की संप्रभुता व आतंरिक मामले में कोई दखल नहीं देगा, 30 दिन मे अमरीकी नाकाबंदी खत्म होगी,ईरानी क्षेत्र से अमरीकी सेना हटेगी, 30 दिन में होर्मूज को खोला जाएगा,ईरानी तेल,पेट्रो केमिकल से प्रतिबंध हटाया जाएगा,ईरान को निर्यात का पूरा अधिकार होगा,अमरीका व उसके सहयोगी ईरान के पुनर्निर्माण के लिए 28 लाख करोड़ रुपए का पैकेज देंगे। परमाणु मुद्दे और ईरान पर से प्रतिबंध हटाने के लिए 60 दिन बात होगी,एनएनपीटी के तहत ईरान परमाणु बम नहीं बनान का लिखित में आश्वासन देगा,वार्ता अवधि मे अमरीका सेना का जमाव नहीं करेगा न ही नए प्रतिबंध लगाएगा, वार्ता की शुरुआत में ही अमरीका ईरान की करीब 1.25 लाख करोड़ की संपत्ति को डीफ्रीज करेगा,वार्ता की शर्तें लागू करने के लिए समिति का गठन किया जाएगा,संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद फाइनल एग्रीमेंट की घोषणा करेगा ।अमरीकी यह शर्तें पहले भी मान सकता था लेकिन वह ईरान को हराना चाहता था और वह यही नहीं कर सका इसलिए बाद में उसे वह शर्तें माननी पड़ी है।

शांति के लिए प्रयास शुरू हो गए हैं ऐसा नहीं है कि दोनों देशों के बीच शांति का यह कोई पहला प्रयास है, इससे पहले भी कई प्रयास हो चुके हैं लेकिन कभी अमरीका तो कभी ईरान के अड़ने के कारण सफल नहीं हुए। अभी जो प्रयास है, इसमे कई पेंच ऐसे है जिस पर दोनों देशों के बीच विवाद हो सकता है, बात हो सकती है। कभी ट्रंप कुछ कह सकते हैं,कभी ईरान की तरफ से कुछ कहा जा सकता है। इसके अलावा इजराइल ने साफ कर दिया है कि शांति की जो बाते हो रही हैं वह ईरान व अमरीका के बीच हो रही है. इसे मानने के लिए इजराइल मजबूर नहीं है यानी वह अभी कुछ दिन भले लेबनान में आतंकियों पर हमला न करे लेकिन भविष्य में भी नहीं करेगा ऐसा नही माना जा सकता। अमरीका भले अपने लक्ष्य को हासिल किए युध्द मैदान से हट सकता है लेकिन इजराइल का साफ कहना है कि उसका लक्ष्य

घरेलू महिलाओं को भी है, आर्थिक सबलता की आवश्यकता

डॉ. अंशुल उपाध्याय

भारत मे घरेलू महिलाओं को भी आर्थिक सबलता का अधिकार प्राप्त होना चाहिये ।वे महिलाये जो नोकरी पेशा नही है ।और घर पर रहकर ही अपने बच्चो और परिवार के पोषण के लिये अपना सारा समय लगा देती है ।उनकी व्यक्तिगत जरूरतों को ध्यान में रखते हुए उन्हें उनके पति के द्वारा कुछ धनराशि प्रति माह प्राप्त होनी ही चाहिए। इससे न केवल महिलाओं को सबलता मिलेगी बल्कि घरेलू हिंसा के मामलो में भी कमी आएगी। भारत मे लगभग घरेलू दायरे में हिंसा को घरेलू हिंसा कहा जाता है। किसी महिला का शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक, मौखिक, मनोवैज्ञानिक या यौन शोषण किसी ऐसे व्यक्ति द्वारा किया जाना जिसके साथ महिला के पारिवारिक सम्बन्ध हैं, घरेलू हिंसा में शामिल है।

घरेलू हिंसा के विरुद्ध महिला संरक्षण अधिनियम की धारा, 2005 घरेलू हिंसा को पारिभाषित किया गया है प्रतिवादी का कोई बर्ताव, भूल या किसी और को काम करने के लिए नियुक्त करना, घरेलू हिंसा में माना जाएगा। क्षति पहुँचाना या जख्मी करना या पीड़ित व्यक्ति को स्वास्थ्य, जीवन, अंगों या हित को मानसिक या शारीरिक तौर से खतरे में डालना या ऐसा करने की नीयत रखना और इसमें शारीरिक, यौनिक, मौखिक और भावनात्मक और आर्थिक शोषण शामिल है; या दहेज या अन्य संपत्ति या मूल्यवान प्रतिभूति की अवैध मांग को पूरा करने के लिए महिला या उसके रिश्तेदारों को मजबूर करने के लिए यातना देना, नुक्सान पहुँचाना या जोखिम में डालना ; या पीड़ित या उसके निकट सम्बन्धियों पर उपरोक्त वाक्यांश (क) या (ख) में सम्मिलित किसी आचरण के द्वारा दी गयी धमकी का प्रभाव होना; या पीड़ित को शारीरिक या मानसिक तौर पर घायल करना या नुक्सान पहुँचाना।

सर्वेक्षण में पाया गया है कि 32% विवाहित महिलाओं (18-49 वर्ष) ने शारीरिक, यौन या भावनात्मक वैवाहिक हिंसा का अनुभव किया है। वैवाहिक हिंसा का सबसे आम प्रकार शारीरिक हिंसा (28%) है, जिसके बाद महिलाओं के साथ भावनात्मक हिंसा और यौन हिंसा हुई है ।महिलाओं के खिलाफ शारीरिक हिंसा के 80% से अधिक मामलों में अपराधी पति होता है। जिन पतियों ने स्कूली शिक्षा के 12 या अधिक वर्ष पूरे कर लिए हैं, उनमें शारीरिक, यौन, या भावनात्मक वैवाहिक हिंसा करने की संभावना आधी (21%) होती है। जबकि स्कूली शिक्षा न पूरी करने वाले 43% लोग हिंसा में संलिप्त होते हैं। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण भारत सरकार की एक रिपोर्ट के मुताबिक, ज़्यादा पढ़ी-लिखी महिलाओं को अपने पति से घरेलू हिंसा का खतरा कम पढ़ी-लिखी की तुलना में 1.54 गुना ज़्यादा होता है।

एक गैर सरकारी संस्था के मुताबिक, भारत में लगभग पांच करोड़ महिलाओं को अपने घर में ही हिंसा का सामना करना पड़ता है। इनमें से मात्र 0.1 प्रतिशत ही हिंसा के खिलाफ रिपोर्ट लिखाने आगे आती हैं। एनएफएचएस की रिपोर्ट के अनुसार भारत में विवाहित कामकाजी महिलाओं का प्रतिशत 31%(एनएफएचएस- 4), से 32% के बीच हैं।2019-2021, नई NHFS - 5 रिपोर्ट 12 मई 2022 के अनुसार भारत मे 92% महिलाये बिना मेहनताना लिये घरेलू काम करती हैं जबकि सिर्फ 27% पुरूष ही ऐसा करते है।

भारतीय महिलाओ को जो नौकरी पेशा नही है। अपने पति द्वारा प्रति माह कुछ धनराशि अवश्य दी जानी चाहिए, इससे ना केवल घरेलू हिंसा के मामलों में बल्कि महिलाओ के मानसिक तनावो में भी कमी आयेगी। कुछ महिलाएं जो पढ़ी लिखी है मगर नौकरी पेशा नही है उन्हें हर वक़्त ये बात कचोड़ती तो अवश्य होगी की काश वो भी औरो की तरह अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए ही सही कुछ रुपए कमा सकती।

चूंकि शिक्षा का व्यक्ति के मानसिक विकास मे महत्वपूर्ण योगदान होता है। और मानसिक विकास हो जाने के बाद व्यक्ति अपना अच्छा बुरा स्वयम समझ पाता है। ऐसे मे किसी मानसिक रूप से विकसित महिला का घर पर रहना कई बार उसकी मजबूरी होती हैं। कई बार बच्चो के पालन हेतू तो कई बार ससुराल वालों की सहमति से। और मन में चल रहे द्वंद का सामना जब महिलाएं नही कर पाती तो डिप्रेशन, हाई बीपी,मधुमेह जैसे रोगों का शिकार हो जाती हैं ।इसलिए अगर महिलाओं को सबल बनाना है तो जरूरी नही परिवार के दायित्व के साथ उन्हे नौकरी पेशा होने को मजबूर किया जाये ।इस समस्या का समाधान है,घरेलू महिलाओ को प्रति माह उनके पति द्वारा कुछ धनराशि प्रदान किया जाना।

भारत में महिला सशक्तिकरण के लिए बहुत से प्रयास किए जा रहे हैं। ऐसे में, जब हम भारत की महिलाओं को देखते हैं तब उनमें सशक्तिकरण केवल स्वयं रोजगार से जुड़ने पर नहीं आता अपितु उनके पास अगर कुछ मात्रा में धन रहे तो खुद व खुद उस धन को किस तरह से अपने रोजमर्रा की आवश्यकताओं में खर्च करना है यह समझ महिलाओं में आ जाती है। भारत में अधिकांश जगहों पर महिलाएं ग्रहणी है और अपना घर संभालती हैं। पर यह हमारी विडंबना है कि हमने अपने घर की महिलाओं को वित्त का अधिकार नहीं दिया ना ही वित्त संबंधी मामलों में हम घर की महिलाओं की सलाह लेते हैं। जबकि हमारे वित्तमत्री जी की स्वयं एक महिला है जो भारत का बजट बनती हैं। और दूसरी तरफ एक वह महिला है जो अपना घर चला रही हैं तो क्या उसमें इतनी भी समझ नहीं होगी कि वह घर के बजट को सही तरीके से चला सके अतः हम बेटियों को तो आगे से पढाते हैं सब उन्हें सक्षम बनाने के लिए हर संभव प्रयास करते हैं पर फिर हम ये क्यों भूल जाते हैं की हमारी बेटी ही तो कल किसी और के घर की बहु बनेगी। अतः अपनी बेटी को हमेशा धन देते रहना और बहू को उससे वंचित रखना क्या ये सही है ?

इसलिए भारत में यह प्रावधान अवश्य ही होना चाहिए की विवाह के पश्चात यदि कोई महिला नौकरी पेशा नही है तो उसे उसक उसके पति के द्वारा मासिक तौर पर कुछ धनराशि आवश्य प्रदान की जाए। इससे न केवल घरेलू महिलाएं अपनी जरूरत की चीजें खुद ले पाएंगी साथ ही घर की छोटी-छोटी चीजो के लिये उन्हें किसी और पर निर्भर नही होना होगा। जो उनके मानसिक स्वास्थ के साथ-साथ पारिवारिक शांति के लिए भी अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

सैन्य परंपराओं और पोशाक में ऐतिहासिक बदलाव

महेन्द्र तिवारी

भारतीय सेना का इतिहास पराक्रम, शौर्य और अप्रतिम बलिदान की गाथाओं से समृद्ध है। स्वतंत्रता के बाद से ही हमारी सेना ने देश की सीमाओं की रक्षा करने और राष्ट्रीय संप्रभुता को अक्षुण्ण बनाए रखने में अभूतपूर्व भूमिका निभाई है। हालांकि, स्वतंत्रता के कई दशकों बाद भी सेना की कुछ आंतरिक व्यवस्थाओं, नियमों, पोशाक और प्रतीकों में ब्रिटिश काल की स्पष्ट छाप दिखाई देती थी। वर्तमान समय में भारतीय सेना अपनी इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में एक युगांतरकारी और अत्यंत महत्वपूर्ण परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। सेना द्वारा अपनी वेशभूषा नीति, औपचारिक परंपराओं और सदियों पुराने रीति-रिवाजों में किए जा रहे बदलाव इस बात का जीवंत प्रमाण हैं कि अब देश अपनी औपनिवेशिक विरासत को पीछे छोड़ने के लिए मानसिक रूप से पूरी तरह तैयार हो चुका है। इन महत्वपूर्ण और दूरगामी सुधारों का मुख्य उद्देश्य भारतीय सेना को विदेशी प्रभाव से मुक्त कराकर विशुद्ध रूप से भारतीय संस्कृति, सभ्यता और अपनी ऐतिहासिक जड़ों से गहराई से जोड़ना है। यह संपूर्ण प्रक्रिया भारत सरकार के उन 5 महासंकल्पों का एक अनिवार्य हिस्सा है, जिन्हें पंच प्रण के नाम से जाना जाता है। इन संकल्पों में से एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रण गुलामी की हर सोच और उसके प्रत्येक प्रतीक से पूर्ण मुक्ति पाना है, जिसे भारतीय सेना अब धरातल पर पूरी निष्ठा के साथ उतार रही है।

सैनिक परंपराओं में सबसे पहला और प्रत्यक्ष बदलाव सैन्य कवायद और आधिकारिक समारोहों के दौरान देखा जा सकता है। ब्रिटिश शासनकाल से ही यह व्यवस्था निरंतर चली आ रही थी कि जब भी कोई वरिष्ठ सैन्य अधिकारी किसी सैनिक कदमताल या विदाई समारोह की सलामी लेता था, तो वह समीक्षा अधिकारी के रूप में अपने साथ एक विशेष औपचारिक तलवार रखता था। यह तलवार ब्रिटिश काल में औपनिवेशिक शासकों द्वारा अपनी शक्ति, सवोच्च कमान और भारतीय सैनिकों पर अपने प्रभुत्व का प्रदर्शन करने का एक मुख्य माध्यम मानी जाती थी। स्वतंत्र भारत की लोकतांत्रिक व्यवस्था और संप्रभु राष्ट्र में इस तरह के सामंती प्रतीकों की कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी। इसी ऐतिहासिक तथ्य को ध्यान में रखते हुए अब समीक्षा अधिकारी द्वारा सैन्य मार्च के दौरान या किसी भी अन्य औपचारिक निरीक्षण में तलवार रखने की इस पुरानी प्रथा को पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया है। इसके साथ ही, वरिष्ठ सैन्य अधिकारियों द्वारा अपनी कमान और नेतृत्व के प्रतीक के रूप में ले जाई जाने वाली विशेष छड़ी के उपयोग की भी गहन समीक्षा की गई है और इसके इस्तेमाल को अब बेहद सीमित कर दिया गया है। यह निर्णय स्पष्ट करता है कि भारतीय सेना में नेतृत्व और सम्मान का आधार कोई बाहरी वस्तु या औपनिवेशिक दिखावा नहीं, बल्कि अधिकारी की अपनी योग्यता, कर्तव्यपरायणता और अपने देश के प्रति अटूट निष्ठा है।

इस वैचारिक परिवर्तन का सीधा और गहरा असर सैन्य अधिकारियों के पहनावे और पोशाक से जुड़े नियमों पर भी दिखाई दे रहा है। एक लंबे समय से यह देखा जा रहा था कि सैन्य अधिकारियों के भोजनालयों और अन्य महत्वपूर्ण औपचारिक आयोजनों में पश्चिमी देशों के कोट, औपचारिक वस्त्रों और गले के बंध का ही प्रचलन अनिवार्य बना हुआ था। भारतीय जलवायु और यहाँ की गौरवशाली संस्कृति के सवर्था विपरीत इस तरह के विदेशी पहनावे को ढोना भी एक प्रकार की मानसिक परतंत्रता का ही हिस्सा माना जा सकता है। इस पुरानी व्यवस्था को बदलते हुए अब अधिकारियों की औपचारिक पोशाक में पहली बार ह्यबंदीह्न नाम के पारंपरिक भारतीय परिधान को आधिकारिक तौर पर स्थान दिया गया है। यह बिना आस्तीन का एक विशेष वस्त्र है, जिसे आम बोलचाल में पारंपरिक कुर्ता या भारतीय नेहरू वेशभूषा के रूप में भी जाना जाता है। अब सैन्य अधिकारी इसे अपनी कमीज और पतलून के साथ अत्यंत गर्व से धारण कर सकते हैं। यह कदम न केवल भारतीय वस्त्र उद्योग और स्थानीय शिल्पकला को नया सम्मान देता है, बल्कि सैन्य जीवनशैली में एक विशिष्ट भारतीय पहचान का समावेश भी करता है। इसके माध्यम से यह दृढ़ संदेश दिया गया है कि हमारे अपने पारंपरिक परिधान भी दुनिया के किसी भी उच्च स्तरीय आधिकारिक आयोजन के लिए पूरी तरह से गरिमापूर्ण और सर्वश्रेष्ठ हैं।

परंपराओं के इस शुद्धिकरण के अंतर्गत केवल पहनावा ही नहीं बदला गया है, बल्कि अधिकारियों की विदाई के तौर-तरीकों में भी बड़े सुधार किए गए हैं। पूर्ववर्ती नियमों के अनुसार, जब भी सेना के शीर्ष पदों पर आसीन अधिकारी, जैसे थल सेनाध्यक्ष या सैन्य कमान प्रमुख अपनी लंबी सेवा के बाद सेवानिवृत्त होते थे, तो उन्हें विदाई देने के लिए घोड़ों से खिंचने वाली एक पुरानी पारंपरिक बग्घी का उपयोग किया जाता था। यह घोड़ों वाली बग्घी प्रथा पूरी तरह से ब्रिटिश राजसी ठाट-बाट और आम जनता तथा साधारण सैनिकों से दूरी बनाए रखने की औपनिवेशिक मानसिकता से प्रेरित थी, जो एक लोकतान्त्रिक देश की सेना में उचित नहीं जान पड़ती थी। अब सेना ने इस सामंती विदाई प्रथा को भी हमेशा के लिए बंद करने का ऐतिहासिक फैसला किया है। अब अधिकारियों की विदाई बेहद सादगीपूर्ण, अनुशासित और भारतीय मूल्यों के अनुरूप की जाती है। यह बदलाव सैन्य अधिकारियों और उनके अधीन काम करने वाले जवानों के बीच की दूरी को कम करने तथा सेना के भीतर एक समतावादी और आत्मीय वातावरण स्थापित करने में बहुत सहायक सिद्ध हो रहा है।

सैन्य संस्कृति का एक और बेहद संवेदनशील और महत्वपूर्ण हिस्सा उसका संगीत होता है, जो सैनिकों के भीतर अदम्य साहस का संचार करता है। युद्ध के मैदान से लेकर शांति काल के समारोहों तक, सैन्य संगीत दल हमेशा से जवानों में जोश और देशप्रेम की भावना भरते रहे हैं। लेकिन स्वतंत्रता के इतने वर्षों बाद भी हमारे विभिन्न सैन्य संगीत दल पुरानी अंग्रेजी और स्कॉटिश धुनों को बजाने के लिए विवश थे। गणतंत्र दिवस उत्सव के समापन समारोह के अवसर पर आयोजित होने वाले भव्य कार्यक्रम में वर्षों तक एक विदेशी प्रार्थना धुन बजाई जाती थी, जिसका भारतीय जनमानस से कोई भी भावनात्मक जुड़ाव नहीं था। अब इस व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन करते हुए उस पुरानी विदेशी धुन के स्थान पर ह्यऐ मेरे वतन के लोगोंह्न जैसी अमर, लोकप्रिय और हृदयस्पर्शी भारतीय देशभक्ति धुन को शामिल किया गया है। इसके अतिरिक्त, सेना के सभी संगीत दल अब विदेशी धुनों की बजाय भारतीय शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत और देश की माटी से जुड़ी देशभक्ति की धुनों को सवोच्च प्राथमिकता दे रहे हैं। जब सैन्य वाद्यों से भारतीय राग और लोक धुनें निकलती हैं, तो वे न केवल सैनिकों का मनोबल बढ़ाती हैं बल्कि पूरे देश को एक सांस्कृतिक सूत्र में पिरोने का काम करती हैं।

इस प्रकार, सैन्य व्यवस्था और उसकी जीवनशैली में किए गए ये सभी बदलाव केवल ऊपरी या सतही परिवर्तन नहीं हैं, बल्कि यह भारतीय समाज और राष्ट्र की सोच में आ रहे एक व्यापक गुणात्मक सुधार को रेखांकित करते हैं। वर्ष 1947 में भले ही हमें राजनीतिक स्वतंत्रता मिल गई थी, लेकिन प्रशासनिक और सैन्य स्तर पर अपनी जड़ों को पहचानकर पूर्ण मानसिक स्वतंत्रता प्राप्त करने की दिशा में यह एक अत्यंत ठोस कदम है। भारतीय सेना द्वारा उठाए गए ये कदम 21वीं सदी के आत्मनिर्भर, सशक्त और स्वाभिमानी भारत की नई तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। जब दुनिया की सबसे शक्तिशाली, अनुशासित और आधुनिक सेनाओं में शुमार हमारी सेना अपनी प्राचीन संस्कृति, परंपराओं और जड़ों की ओर लौटती है, तो इससे देश के प्रत्येक नागरिक में एक नया आत्मविश्वास और अपनी साझी विरासत के प्रति गहरा आदर भाव जागृत होता है। इन सुधारों के माध्यम से सेना ने यह साबित कर दिया है कि वह आधुनिकतम तकनीकों और घातक हथियारों से लैस होने के साथ-साथ वैचारिक रूप से पूरी तरह भारतीय मूल्यों, सिद्धांतों और राष्ट्रभक्ति के प्रति समर्पित है। यह युगांतरकारी बदलाव भविष्य की पीढ़ियों को भी अपनी अनूठी संस्कृति पर गर्व करने की निरंतर प्रेरणा देता रहेगा।

टपकती बूंदों में बसता शिवत्व : रहस्य, श्रद्धा और प्रकृति का दिव्य धाम टपकेश्वर महादेव

सत्य भूषण शर्मा

देहरादून की हरी-भरी वादियों के बीच, पहाड़ों और कल-कल बहती जलधारा की गोद में स्थित है एक ऐसा पावन धाम, जहां पहुंचते ही मन स्वत : हर-हर महादेव का उद्घोष करने लगता है। यह स्थान है—श्री टपकेश्वर महादेव मंदिर। यहां प्रकृति स्वयं भगवान शिव का अभिषेक करती दिखाई देती है। गुफा की छत से निरंतर टपकती जलधाराएं, धूप-दीप की सुगंध, घंटियों की गूंज और भक्तों की अटूट आस्था मिलकर ऐसा वातावरण रचती हैं, जो किसी अलौकिक लोक का आभास कराता है।

देहरादून का यह प्राचीन शिवधाम केवल धार्मिक महत्व ही नहीं रखता, बल्कि भारतीय संस्कृति, अध्यात्म और प्रकृति के अद्भुत संगम का जीवंत प्रतीक भी है। गुफा के भीतर स्थित स्वयंभू शिवलिंग पर सदियों से जल की बूंदें निरंतर गिर रही हैं। यही अद्भुत दृश्य इस मंदिर की सबसे बड़ी पहचान है। मान्यता है कि यह जलधारा भगवान शिव की कृपा और दिव्य ऊर्जा का प्रतीक है।

पौराणिक कथाओं के अनुसार यह स्थान महाभारत काल से जुड़ा हुआ है। माना जाता है कि गुरु द्रोणाचार्य ने इसी गुफा में तपस्या की थी। उनके पुत्र अश्वत्थामा के लिए जब दूध की व्यवस्था नहीं हो सकी, तब भगवान शिव ने प्रसन्न होकर गुफा की छत से दूध की धारा प्रवाहित कर दी थी। कालांतर में वही धारा जल में परिवर्तित हो गई, जो आज भी बूंद-बूंद शिवलिंग पर गिरती रहती है। यही कथा इस स्थान को रहस्य और आस्था का अनूठा केंद्र बनाती है।

टपकेश्वर महादेव मंदिर परिसर में केवल शिवलिंग ही नहीं, बल्कि अनेक देवी-देवताओं के मंदिर भी श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं। यहां मां दुर्गा, भगवान गणेश, हनुमान जी तथा माता वैष्णो देवी के मंदिर भी स्थित हैं। पूरे परिसर में आध्यात्मिक ऊर्जा का ऐसा प्रवाह महसूस होता है, मानो हर पत्थर और हर जलधारा शिवमय हो।

मंदिर के समीप बहती स्वच्छ जलधारा श्रद्धालुओं के आकर्षण का विशेष केंद्र है। भक्त यहां श्रद्धा स्नान कर स्वयं को पवित्र अनुभव करते हैं। पहाड़ों से उतरता ठंडा जल, आसपास की हरियाली और प्राकृतिक शांति मन को गहरे सुकून से भर देती है। कई श्रद्धालु यहां ध्यान और आत्मचिंतन के लिए भी समय बिताते हैं। सावन मास और महाशिवरात्रि के दौरान टपकेश्वर महादेव धाम का दृश्य अत्यंत भव्य हो उठता है। दूर-दूर से आए श्रद्धालु जलाभिषेक और रुद्राभिषेक के लिए लंबी कतारों में खड़े दिखाई देते हैं। पूरा वातावरण शिवभक्ति, भजन-कीर्तन और मंत्रोच्चार से गूंज उठता है। ऐसा प्रतीत होता है मानो स्वयं कैलाश की दिव्यता धरती पर उतर आई हो।

आज की भागदौड़ और तनाव भरी जिंदगी में टपकेश्वर महादेव जैसा स्थल केवल एक तीर्थ नहीं, बल्कि मानसिक शांति और आत्मिक ऊर्जा का केंद्र बन चुका है। यह धाम हमें प्रकृति के संरक्षण, संस्कृति के सम्मान और अध्यात्म के महत्व का संदेश देता है। जरूरत इस बात की है कि हम ऐसे ऐतिहासिक और धार्मिक स्थलों की पवित्रता बनाए रखें। स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण और सांस्कृतिक चेतना के माध्यम से ही आने वाली पीढ़ियों तक इस धरोहर की दिव्यता पहुंचाई जा सकती है। टपकेश्वर महादेव केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि वह आध्यात्मिक अनुभूति है, जहां टपकती हर बूंद में शिवत्व का एहसास होता है और जहां पहुंचकर मनुष्य स्वयं को प्रकृति और परमात्मा के अधिक निकट महसूस करता है।

तेल खरीदना महंगा

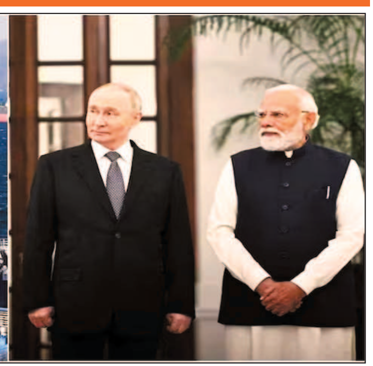

पिछले महीने भारत यात्रा के लिए रवाना होने से पहले अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने एलान किया था कि वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति जल्द ही नई दिल्ली जाएंगी और भारत वेनेजुएला से अधिक तेल खरीदेगा।

वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज पांच दिन की भारत यात्रा आई हैं। संभावना है कि उनकी इस यात्रा के दौरान भारत वेनेजुएला से कच्चे तेल की अधिक खरीदारी का सौदा करेगा। उल्लेखनीय है कि पिछले महीने के आखिर में भारत यात्रा के लिए रवाना होने से पहले अमेरिकी विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने इस संबंध में एलान किया था। कहा था कि रोड्रिगेज जल्द ही नई दिल्ली जाएंगी और भारत वेनेजुएला से अधिक तेल खरीदेगा। इस घोषणा की पृष्ठभूमि गौरतलब है। पिछले तीन जनवरी को वेनेजुएला पर अचानक हमला कर वहां के राष्ट्रपति निकलस मदुरो और उनकी पत्नी का अपहरण करने के बाद अमेरिका ने वहां के तेल भंडार पर अपना पूरा नियंत्रण बना लिया है।

अब अमेरिकी कंपनियां वहां तेल निकालने और बिक्री करने में जुटी हुई हैं। इस बिक्री का पैसा भी अमेरिका के पास जाता है, जो उसमें से वेनेजुएला का हिस्सा अपनी मर्जी से तय कर उसके खजाने में भेज देता है। रोड्रिगेज वेनेजुएला में चाविस्मो (पूर्व राष्ट्रपति उगो चावेज की समर्थक विचारधारा) का प्रमुख चेहरा रही हैं। मगर तीन जनवरी की घटना के बाद कार्यवाहक राष्ट्रपति बनने के बाद से अमेरिका द्वारा वहां थोपी गई औपनिवेशिक किस्म की व्यवस्था में उन्होंने काम करना स्वीकार किया है। इस बारे में लैटिन अमेरिकी वामपंथी समूहों में अलग-अलग राय है।

एक सोच है कि ऐसा कर रोड्रिगेज आगे और हमलों और इस क्रम में चाविस्मो के सांगठनिक ढांचे को पूरी तरह नष्ट हो जाने से बचा रही हैं। इसे एक तरह की समय काटने की रणनीति बताया गया है। मगर उनके आलोचकों की संख्या भी कम नहीं है। उधर यह भी कम विचित्र नहीं है कि भारत की तेल खरीद संबंधी फैसले अमेरिका ले रहा है। रूस के बजाय वेनेजुएला से तेल खरीदना भारत को महंगा पड़ रहा है। मगर डॉनल्ड ट्रंप के काल में अमेरिका से रिश्ता रखने के लिए ऐसी कीमतें चुकाने की अनिवार्य शर्त उसके सभी कथित सहयोगी देशों को चुकानी पड़ रही है। भले बात परेशान करने वाली हो, लेकिन यही सच है कि रोड्रिगेज की भारत यात्रा का एजेंडा वॉशिंगटन से तय हुआ है।

गंगा में दूध चढ़ाने से मिलते हैं ये अनगिनत लाभ

मां गंगा की पूजा करने से जीवन में सुख-समृद्धि का वास होता है। साथ ही, मां गंगा का आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। व्यक्ति को मृत्यु के बाद मोक्ष मिलता है। वहीं, ज्योतिषाचार्य ने बताया कि मां गंगा की पूजा के दौरान या गंगा स्नान के दौरान गंगा में दूध भी चढ़ाना चाहिए। आइये जानते हैं इसके पीछे का महत्व एवं इससे मिलने वाले लाभ।

गंगा में दूध चढ़ाने से मिलती है शिव कृपा

मां गंगा का वास शिव जी की जटाओं में माना गया है। ऐसे में मां गंगा की पूजा से शिव जी भी प्रसन्न हो जाते हैं। साथ ही, मां गंगा में दूध चढ़ाने से उतना ही पुण्य प्राप्त होता है जितना पुण्य शिवलिंग पर दूध चढ़ाने से मिलता है। गंगा में दूध चढ़ाने से भगवान शिव की कृपा होती है और व्यक्ति को महादेव का सानिध्य प्राप्त होता है।

गंगा में दूध चढ़ाने से दूर होता है दोष

गंगा में दूध चढ़ाने से ग्रह दोष भी दूर हो जाते हैं। कुंडली में कैसा भी ग्रह दोष क्यों न लग रहा हो, अगर आप उतने सक्षम नहीं है कि ग्रह दोष दूर करने के लिए किसी भी प्रकार की पूजा करवा पाएं तो आप बस गंगा में पूर्ण श्रद्धा से 11 दिनों तक एक छोटी लुटिया में दूध भरकर अर्पित करें। इससे ग्रह दोष से दूर हो जाएगा।

गंगा में दूध चढ़ाने से मिटते हैं पाप

गंगा में स्नान करने से व्यक्ति के पापों का नाश होता है, लेकिन वहीं अगर गंगा में दूध अर्पित किया जाए तो इससे पीढ़ी दर पीढ़ी से चले आ रहे दोषों एवं पापों का निवारण हो जाता है। व्यक्ति के पूर्वजों और उसकी आने वाली पीढ़ी को मां गंगा की कृपा से पाप चक्र के फल से मुक्ति मिलती है। साथ ही, पुण्यों में वृद्धि भी होती है।

गंगा में दूध चढ़ाने से मिलती है दिव्य ऊर्जा

गंगा में दूध चढ़ाने से सकारात्मकता का संचार होता है और व्यक्ति के भीतर, आसपास या घर में मौजूद नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती है। गंगा में दूध अर्पित करने से व्यक्ति के भीतर दिव्य ऊर्जा का संचार होता है और व्यक्ति को आध्यात्मिक शक्ति मिलती है जिससे उसकी भक्ति में बढ़ोतरी होती है और शांति प्राप्त होती है।

गायत्री मंत्र का जाप करते समय भूलकर भी न करें ये गलतियां

गायत्री मंत्र को समस्त मंत्रों में श्रेष्ठ माना जाता है, यदि आप इस मंत्र का जाप करते हैं तो कुछ नियमों का पालन करना जरूरी माना जाता है। ऐसा करने से आपके जीवन में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहती है।

हिंदू धर्म में किसी भी मंत्र के जाप का विशेष महत्व है और हर मंत्र के उच्चारण का विशेष तरीका है। मंत्रों के जाप से मन को शांति मिलती है और शरीर में भी एक अलग ऊर्जा का वास होता है। यदि आप सुबह शाम मंत्रों का जाप नियम पूर्वक करते हैं तो ये कई तरह से लाभदायक होते हैं। इन्हीं मंत्रों में से एक है गायत्री मंत्र। इसके जाप से आसपास का वातावरण शुद्ध होता है और घर में खुशहाली बनी रहती है। गायत्री मंत्र के जाप करने का जीवन में विशेष महत्व है। यही नहीं मान्यता है कि यदि आप नियमित रूप से गायत्री मंत्र का जाप करते हैं तो आपके जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता मिलती है। गायत्री मंत्र वह मंत्र है जो आपके आत्मबल को मजबूत करने में मदद करता है। ऐसा माना जाता है कि गायत्री मंत्र का जाप आपको कुछ विशेष नियमों के अनुसार ही करना चाहिए अन्यथा इसके फायदों की जगह नुकसान हो सकते हैं।

तामसिक लोगों को नहीं करना चाहिए गायत्री मंत्र का जाप

यदि आप गायत्री मंत्र का जाप करते हैं तो ध्यान रखें कि आपको मांस-मदिरा या तामसिक भोजन का भोग करके इस मंत्र का जाप नहीं करना चाहिए। गायत्री मंत्र को अत्यंत शक्तिशाली मंत्र माना जाता है और यदि तामसिक जीवन जीने वाले इस मंत्र का जाप करेंगे तो इसके फायदे की जगह नुकसान होने लगेंगे। ऐसा करना मंत्रों का अपमान माना जाता है और आपको इस मंत्र के सकारात्मक फल नहीं मिलते हैं।

बिना स्नान के न करें गायत्री मंत्र

गायत्री मंत्र का जाप हमेशा स्नान करने के बाद ही करना चाहिए। आप इस मंत्र को जिस समय भी पढ़ें ध्यान में रखें कि पहले आप स्नान करके साफ़-सुथरे वस्त्रों को धारण करें उसके बाद ही इस मंत्र का जाप करें। कभी भी इस मंत्र का जाप आपको बिना स्नान किए हुए नहीं करना चाहिए और गंदे वस्त्रों को पहनकर भी नहीं करना चाहिए। यदि आप इस मंत्र का जाप इन नियमों से नहीं करते हैं तो यह आपके लिए नुकसान पहुंचा सकता है।

मंत्र जाप में एक ही आसन का में करें प्रयोग

गायत्री मंत्र का जाप करते समय आपको सबसे ज्यादा इस बात का ध्यान रखने की जरूरत होती है कि आपको हमेशा एक ही आसन पर बैठकर मंत्र जाप करना चाहिए। आपको रोज अलग आसन और अलग स्थान पर बैठकर मंत्र जाप नहीं करना चाहिए। यदि आप रोज नए आसन का इस्तेमाल करते हैं तो आपको इसके नुकसान हो सकते हैं और मंत्र जाप का फल भी नहीं मिलेगा।

कभी ही अशुद्ध मन से न करें गायत्री मंत्र

कई बार हम पूजा-पाठ या मंत्रों का जाप करते समय मन में कुछ ऐसे ख्याल लाते हैं जो नुकसान पहुंचा सकते हैं। आपको कभी भी अशुद्ध मन से गायत्री मंत्र का जाप नहीं करना चाहिए। ऐसा करने से आपके जीवन में समस्याएं आ सकती हैं और आपके बनते काम भी बिगड़ सकते है। कोशिश करें कि आप अच्छी तरह से मंत्र पर ध्यान केंद्रित करने के बाद ही इसका जाप करें।

उचित समय पर ही करें गायत्री मंत्र का जाप

आपको हमेशा मंत्र का जाप करते समय सही समय का ध्यान रखना चाहिए। यह मंत्र आमतौर पर दिन के तीन मुख्य समय पर किया जा सकता है। इसके लिए सबसे अच्छा समय ब्रह्म मुहूर्त माना जाता है। आपको हमेशा ब्रह्म मुहूर्त में ही जाप शुरू करना चाहिए और कोशिश करें कि सूर्योदय तक इसका समापन कर दें। इस मंत्र का जाप शाम के समय सूर्यास्त से पहले भी किया जा सकता है।

गलत दिशा में बैठकर न करें गायत्री मंत्र का जाप

शास्त्रों के अनुसार गायत्री मंत्र का जाप करते समय आपको दिशा का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। यदि आप सुबह इस मंत्र का जाप कर रहे हैं तो इसे पूर्व दिशा की तरफ मुंह करके पढ़ें। ऐसा इसलिए अच्छा माना जाता है क्योंकि सूर्य इसी दिशा से निकलता है और इस दिशा की तरफ बैठकर जाप करने से गायत्री मंत्र के साथ सूर्य की पूर्ण ऊर्जा भी घर में प्रवेश करती है।

रुद्राक्ष की माला से करें मंत्र जाप

गायत्री मंत्र का जाप करते समय यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि आप रुद्राक्ष की माला का उपयोग करें। रुद्राक्ष की माला को गायत्री मंत्र जाप के लिए सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। इसके अलावा, आप तुलसी और चंदन की माला का भी उपयोग कर सकते हैं।

गायत्री मंत्र, जिसे वेदों की माता कहा जाता है, का जाप हमारे मन और आत्मा को शुद्ध करने के लिए अत्यंत प्रभावी होता है। इस मंत्र का नियमित जाप करने से मानसिक शांति और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त होती है।

किस दिशा में मुख करके करें गायत्री मंत्र का जाप?

गायत्री मंत्र का जाप पूर्व दिशा की ओर मुख करके करना चाहिए। पूर्व दिशा को सूर्योदय की दिशा माना जाता है और सूर्य को देवताओं का देवता माना जाता है। इसलिए, पूर्व दिशा में मुख करके जाप करने से सूर्यदेव की कृपा प्राप्त होती है। उत्तर दिशा को भी गायत्री मंत्र जाप के लिए शुभ मानते हैं। उत्तर दिशा को ज्ञान और शांति की दिशा माना जाता है। इसके अलावा पश्चिम या दक्षिण दिशा में भी मुख करके गायत्री मंत्र का जाप करना उत्तम फलदायी माना जाता है।

गायत्री मंत्र का जाप करने का महत्व क्या है?

धार्मिक मान्यताओं के अनुसार, ऐसा कहा जाता है कि गायत्री मंत्र का जाप करने से व्यक्ति को कभी भी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ता है। साथ ही अगर आपके जीवन में किसी तरह की कोई परेशानी चल रही है, तो उससे भी छुटकारा मिल जाता है। आप गायत्री मंत्र का कम से कम 108 बार जाप जरूर करें। गायत्री मंत्र का जाप करने से बुद्धि का विकास होता है और याददाश्त तेज होती है। गायत्री मंत्र का जाप करने से एकाग्रती बढ़ती है। गायत्री मंत्र का जाप करने से मोक्ष की प्राप्ति भी होती है। इसके अलावा अगर आप मानसिक परेशानी से जूझ रहे हैं, तो उससे भी छुटकारा मिल जाता है।

रामायण से कैसे बना गायत्री मंत्र? किसने की थी रचना

गायत्री मंत्र का जाप करने से मनुष्य के भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, मानसिक तनाव कम होता है, जीवन में शांति एवं समृद्धि आती है।

गायत्री मंत्र हिंदू धर्म का एक अत्यंत पवित्र और प्रभावशाली मंत्र है, जिसका विशेष महत्व है। यह मंत्र भगवान सूर्य को समर्पित होता है और आत्मा के शुद्धिकरण, मानसिक शांति, और दिव्य ज्ञान की प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाता है। गायत्री मंत्र का उचारण व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाता है। यह मंत्र ब्रह्मा, भगवान विष्णु और भगवान शिव के तत्वों से जुड़ा हुआ है। इसका उद्देश्य साधक को आत्मज्ञान, तात्त्विक समझ और ब्रह्मा की साक्षात प्राप्ति की ओर अग्रसर करना है। गायत्री मंत्र का जाप करने से मनुष्य के भीतर सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है, मानसिक तनाव कम होता है, जीवन में शांति एवं समृद्धि आती है। इस मंत्र के नियमित जाप से व्यक्ति का आत्मविश्वास बढ़ता है। ज्योतिषाचार्य राधाकांत वत्स ने हमें गायत्री मंत्र की उत्पत्ति के बारे में बताया।

रामायण हिंदू धर्म के पवित्र ग्रंथों में से एक है, जिसमें भगवान राम और देवी सीता के जीवन की कथा है। इस ग्रंथ में बताया गया है कि कैसे भगवान राम ने रावण जो बुराई का प्रतीक था, उसका वध कर धर्म विजय प्राप्त की। रामायण में कुल सात अध्याय हैं और इसमें लगभग 24,000 श्लोक हैं।

रामायण में एक राजा, आदर्श पिता, आदर्श पुत्र, आदर्श पत्नी, आदर्श भाई और आदर्श सेवक के रूप में रिश्तों और उनके कर्तव्यों का वर्णन किया गया है। महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण को आदिकाव्य कहा जाता है, जिसमें आदि का अर्थ है प्रथम और काव्य का अर्थ है कविता।

इसी दिव्य रामायण से बना था गायत्री मंत्र जिसकी रचना भगवान श्री राम के कुल गुरु ऋषि विश्वामित्र ने की थी। असल में रामायण में मौजूद 24,000 श्लोकों से ही गायत्री मंत्र को बनाया गया था। रामायण के हर 1000 श्लोकों के बाद आने वाले पहले अक्षर से गायत्री मंत्र को रचा गया था।

गायत्री मंत्र ऊँ भूर्भुव: स्व: तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न: प्रचोदयात में 24 अक्षर हैं। ऐसे में हर हजार श्लोकों के बाद के पहले अक्षर को जोड़ा जाए तो 24 अक्षरों का समूह बनता है और इसी से उत्पत्ति हुई गायत्री मंत्र की जिसे ब्रह्म मुहूर्त में जपना अत्यधिक लाभकारी माना जाता है।

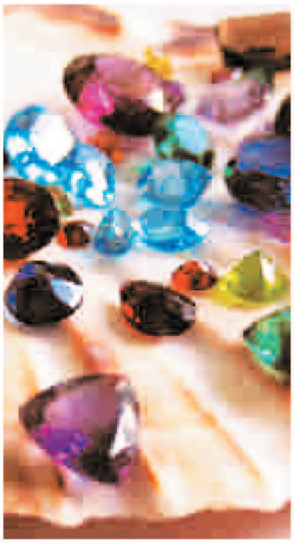

अपनी राशि के अनुसार धारण करें रत्न, बनी रहेगी सुख समृद्धि

रत्नों को लंबे समय से ऊर्जा और भाग्य का शक्तिशाली प्रतीक माना जाता रहा है। ज्योतिष के क्षेत्र में, इन कीमती पत्थरों का एक विशेष महत्व बताया जाता है, क्योंकि ऐसा माना जाता है कि वे प्रत्येक राशि की अनूठी विशेषताओं और व्यक्तित्व के साथ जोड़े जाते हैं। इसलिए यदि आप अपनी राशि को ध्यान में रखते हुए रत्नों का चुनाव करती हैं और उन्हें किसी न किसी रूप में धारण करती हैं तो आपकी समृद्धि बनी रहती है।

मेष राशि - अपनी गतिशील ऊर्जा के लिए जानी जाने वाली उग्र राशि मेष के लिए दो रत्न बहुत ज्यादा लाभदायक हो सकते हैं। पहला मंत्रमुग्ध कर देने वाला माणिक है, यह एक ऐसा पत्थर है जो जुनून और जीवन शक्ति का संचार करता है। यह मेष राशि के लोगों को उनकी आंतरिक शक्ति और साहस को बढ़ाने में मदद करता है। एक अन्य रत्न जिसे मेष राशि का पूरक माना जाता है, जीवंत कार्नेलियन है। यह जेमस्टोन प्रेरणा, रचनात्मकता और आत्म विश्वास जगाता है और मेष राशि वालों को निडरता से नए प्रयासों को शुरू करने के लिए सशक्त बनाता है।

वृषभ राशि - वृषभ राशि के लोग, जो अपनी स्थिरता और जमीन से जुड़े स्वभाव के लिए जाने जाते हैं। इन लोगों के लिए पन्ना सबसे अच्छा रत्न माना जाता है। यह रत्न प्रेम, विश्वास और समृद्धि को बढ़ावा देता है, जिससे वृषभ राशि के लोग मजबूत संबंध बनाने और प्रचुरता प्रकट करने में सक्षम होते हैं। इसके अतिरिक्त, कोमल गुलाब क्वार्ट्ज वृषभ की भावनात्मक सद्भाव का प्रतीक माना जाता है।

मिथुन राशि - मिथुन, सामाजिक और बौद्धिक वायु चिह्न, एक्वामरीन की शांत ऊर्जा से लाभ पा सकता है। यह रत्न संचार, स्पष्टता और बौद्धिक खोज को बढ़ाता है, मिथुन राशि वालों को अपने विचारों और विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में सहायता करता है।

कर्क राशि - भावनात्मक और सहज ज्ञान युक्त कर्क राशि ईथर मूनस्टोन से लाभ पा सकती है। यह रत्न चुनौतीपूर्ण समय में शांति की भावना प्रदान करते हुए कर्क राशि की संवेदनशीलता, अंतर्ज्ञान और भावनात्मक स्थिरता का पोषण करता है। इसके अतिरिक्त, चमकदार मोती प्रेम, पवित्रता और शांति का प्रतीक माना जाता है, जो कर्क राशि के पोषण गुणों को बढ़ाता है।

सिंह राशि - आत्मविश्वासी और करिश्माई सिंह राशि के लिए, दो रत्न अलग दिखते हैं। पहला है सनस्टोन जो सूर्य की उज्ज्वल ऊर्जा को दर्शाता है। यह सिंह राशि के नेतृत्व गुणों, आत्म-अभिव्यक्ति और जीवन शक्ति को बढ़ाता है। सिंह राशि के लिए उपयुक्त एक और रत्न है गोल्डन सिट्रीन। ऐसा माना जाता है कि यह स्टोन बहुतायत और अच्छे भाग्य को आकर्षित करता है, सिंह के चुंबकीय व्यक्तित्व को बढ़ाने में मदद करता है।

कन्या राशि - विश्लेषणात्मक और व्यावहारिक कन्या राशि के लिए, पेरिडॉट एक शक्तिशाली रत्न के रूप में कार्य करता है। यह कन्या की सफलता और सकारात्मक परिवर्तन की इच्छा के अनुरूप है। पेरिडॉट जीवन में स्पष्टता, प्रचुरता और सुरक्षा लाता है, जिससे कन्या राशि के लोग आत्मविश्वास के साथ जीवन को नेविगेट कर सकते हैं।

तुला राशि - तुला राशि जो अपने कूटनीतिक स्वभाव और सुंदरता के साथ प्यार के लिए जानी जाती है। यह दो उत्तम रत्नों के साथ सामंजस्य स्थापित कर सकती है। इस राशि के लिए नीलम रत्न सबसे ज्यादा शुभ हो सकता है जो निष्पक्षता और संतुलन के लिए मदद करता है। तुला राशि के लिए अनुकूल एक और रत्न है ओपल यह तुला की रचनात्मकता, अंतर्ज्ञान और भावनात्मक कल्याण को बढ़ाता है।

वृश्चिक राशि - वृश्चिक राशि के लोग, जो अपनी तीव्रता और परिवर्तनकारी प्रकृति के लिए जाने जाते हैं, शक्तिशाली पुखराज की ऊर्जा का उपयोग कर सकते हैं। यह रत्न सफलता, साहस और जुनून को बढ़ावा देता है, वृश्चिक को बाधाओं को दूर करने और व्यक्तिगत विकास को अपनाने के लिए सशक्त बनाता है।

धनु राशि - साहसी और दार्शनिक धनु राशि के लिए फिरोजा रत्न सबसे शुभ माना जाता है। यह स्वतंत्रता, भाग्य और आध्यात्मिक विस्तार का प्रतिनिधित्व करता है और धनु राशि को नए अनुभवों को अपनाने और अपने क्षितिज को व्यापक बनाने के लिए प्रोत्साहित करता है। धनु राशि (धनु राशि के लोगों का स्वभाव) के लिए अनुकूल एक अन्य रत्न रहस्यमयी लापीस लाजुली है, जो ज्ञान और सच्चाई का प्रतीक है, जो स्वयं और दुनिया की गहरी समझ को बढ़ावा देता है।

मकर राशि - मकर राशि के लिए पारंपरिक भाग्यशाली रत्न गार्नेट है। ऐसा माना जाता है कि गारनेट मकर राशि से जुड़े सकारात्मक गुणों को बढ़ाता है, जैसे महत्वाकांक्षा, अनुशासन और व्यावहारिकता। यह भी कहा जाता है कि यह सुरक्षा प्रदान करता है और समग्र जीवन शक्ति को बढ़ाता है। गार्नेट पहनने या धारण करने से मकर राशि वालों को अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद मिल सकती है।

कुंभ राशि - कुंभ राशि के लिए पारंपरिक भाग्यशाली रत्न नीलम है। नीलम एक सुंदर बैंगनी क्वार्ट्ज क्रिस्टल है जो कुंभ राशि से जुड़े सकारात्मक गुणों को बढ़ाता है जैसे कि बौद्धिकता, अंतर्ज्ञान और मानवतावाद। ऐसा कहा जाता है कि यह दिमाग को उत्तेजित करता है, विचारों की स्पष्टता को बढ़ावा देता है और आध्यात्मिक विकास में सहायता करता है। ऐसा माना जाता है कि नीलम कुंभ राशि के व्यक्तित्व में संतुलन और सामंजस्य लाता है। नीलम पहनने या धारण करने से कुंभ राशि वालों को अपनी अनूठी अंतर्दृष्टि प्राप्त करने में मदद मिलती है।

मीन राशि - दयालु और कल्पनाशील मीन राशि के लिए, एक्वामरीन एक शक्तिशाली रत्न के रूप में कार्य करता है। यह मीन राशि वालों के अंतर्ज्ञान, आध्यात्मिक जागरूकता और भावनात्मक स्पष्टता को बढ़ाता है, जिससे उनकी भावनाओं की गहराई को नेविगेट करने में सहायता मिलती है।

आजकल लोग जल्दी हो जाते हैं आहत

मनोज बाजपेयी की फिल्म 'घूसखोर पंडत' अपने टाइटल को लेकर काफी विवादों में रही थी। इसी वजह से फिल्म रिलीज नहीं हो पाई। हाल ही में एक इंटरव्यू में जब उनसे पूछा गया कि आखिर कितनी सावधानी जरूरी है, तो उन्होंने कहा, 'बहुत ध्यान रखना पड़ता है।

आओ मुझे ऑफेंड करो

बातचीत में मनोज बाजपेयी ने फिल्म को लेकर बातचीत में कहा कि आज के समय में लोग बहुत जल्दी आहत हो जाते हैं। उन्होंने कहा, 'हम ऐसे दौर में जी रहे हैं, सिर्फ भारत ही नहीं, पूरी दुनिया में। हर कोई जैसे तैयार बैठा है कि कोई उसे आहत करे। जैसे कोई कह रहा हो- आओ मुझे ऑफेंड करो, मैं सुबह से बैठा हूं।

फिल्ममेकर्स को और ज्यादा सतर्क रहना पड़ता है

उन्होंने आगे कहा कि जब लोग इतने संवेदनशील हो जाते हैं, तो फिल्ममेकर्स को और ज्यादा सतर्क रहना पड़ता है। उन्होंने कहा, 'आप नहीं चाहते कि जिस फिल्म को बनाने में इतनी मेहनत लगी है, उसे बेवजह विवादों में घसीटा जाए। फिल्म सिर्फ एक इंसान की मेहनत नहीं होती, इसमें कई लोगों की मेहनत और करियर जुड़ा होता है।' बात को सकारात्मक अंदाज में खत्म करते हुए मनोज ने कहा, 'हम ऐसे समय में हैं जहां हमें सोच-समझकर काम करना पड़ता है। लेकिन हम एक ऐसे समय की उम्मीद जरूर करते हैं, जब कोई भी बात पर आहत न हो।'

क्या था विवाद

फिल्म के टाइटल 'घूसखोर पंडत' को लेकर विवाद हुआ था। कुछ लोगों का मानना था कि 'पंडत' शब्द, जो आमतौर पर एक ब्राह्मण उपनाम से जुड़ा है, उसे इस तरह इस्तेमाल करना गलत संदेश दे सकता है और लोगों की भावनाओं को ठेस पहुंचा सकता है।

सफलता का सफर आसान नहीं था, हर चुनौती ने मुझे मजबूत बनाया

कहते हैं कि सपने बड़े देखो तो उसकी कीमत भी चुकानी पड़ती है और संघर्ष ही इस कीमत को वसूलता भी है। कई सफल टीवी शो का हिस्सा रह चुकीं अभिनेत्री सुम्बुल तौकीर ने अपने करियर के सफर, संघर्ष और सफलता को लेकर खुलकर बात की है। 'इमली' जैसे चर्चित टीवी शो से घर-घर में पहचान बनाने वाली सुम्बुल का कहना है कि एक सफल कलाकार बनने का उनका रास्ता आसान नहीं था, लेकिन हर अनुभव ने उन्हें आगे बढ़ने और बेहतर बनने की प्रेरणा दी। आईएएनएस से बातचीत में सुम्बुल ने बताया कि उनका सपना हमेशा से अभिनेत्री बनने का था। हालांकि, मनोरंजन जगत में उनकी शुरुआत डांस रियलिटी शो के जरिए हुई, लेकिन उनका लक्ष्य कैमरे के सामने अभिनय करना था। उन्होंने कहा कि खुशी है कि समय के साथ उन्हें अपने सपनों को पूरा करने का अवसर मिला।

सुम्बुल ने बताया, 'मैं हमेशा से एक्टर बनना चाहती थी। इंडस्ट्री में मेरा सफर डांस रियलिटी शो से शुरू हुआ, लेकिन मेरा सपना अभिनय करना था। यह सफर बिल्कुल आसान नहीं रहा। मैंने अच्छे और बुरे दोनों तरह के अनुभव देखे हैं, लेकिन इन्हीं अनुभवों ने मुझे मजबूत बनाया और आगे बढ़ने का हौसला दिया।'

अभिनेत्री ने बताया कि उन्हें अपने निभाने हर किरदार से कुछ नया सीखने का मौका मिला है। उन्होंने कहा कि शुरुआती शोज से लेकर वर्तमान शो 'इत्ती सी खुशी' तक, अलग-अलग किरदारों को पर्दे पर जीवंत करना उन्हें बेहद पसंद है। उनके अनुसार, एक कलाकार के लिए हर किरदार एक नई चुनौती और सीख लेकर आता है। सुम्बुल ने यह भी माना कि कई बार दर्शक किसी कलाकार और उसके किरदार के बीच फर्क करना भूल जाते हैं। उन्होंने कहा कि जब कोई किरदार दर्शकों के दिलों तक पहुंचता है और लोग उस पर मजबूत प्रतिक्रिया देते हैं, तो यह कलाकार के काम की सबसे बड़ी सफलता होती है। उन्होंने कहा कि उन्हें अब तक निभाए गए सभी किरदारों पर गर्व है और भविष्य में भी नए और चुनौतीपूर्ण किरदार निभाने की इच्छा है।

दर्शकों की सोच पर बात करते हुए सुम्बुल ने कहा कि लोग अक्सर पर्दे पर निभाए गए किरदारों के आधार पर कलाकारों की छवि बना लेते हैं। अगर कोई कलाकार नायक या नायिका की भूमिका निभाता है तो दर्शक उससे वास्तविक जीवन में भी वैसा ही व्यवहार करने की उम्मीद करते हैं। वहीं, खलनायक की भूमिका निभाने वाले कलाकारों को कई बार नकारात्मक नजरिए से देखा जाता है।

'आवारापन 2' में खलनायक बनेंगी शबाना आजमी, इमरान हाशमी से होगा टकराव

बॉलीवुड की मशहूर अभिनेत्री शबाना आजमी अपनी आने वाली फिल्म 'आवारापन 2' में पहली बार एक खलनायक की भूमिका में नजर आने वाली हैं। फिल्म में उनके किरदार का नाम नफीसा होगा। फिल्म के प्रोड्यूसर विशेष भट्ट ने इंस्टाग्राम पर शबाना आजमी के साथ एक तस्वीर शेयर करते हुए इस बात की घोषणा की।

उन्होंने बताया कि शबाना आजमी जैसी दिग्गज अभिनेत्री का इस फिल्म से जुड़ना उनके लिए बड़े सम्मान की बात है और उनके आने से कहानी को एक नया मोड़ मिलेगा।

'आवारापन 2' की स्टार कास्ट

इस फिल्म में इमरान हाशमी एक बार फिर अपने पुराने और मशहूर किरदार 'शिवम' के रूप में वापसी कर रहे हैं। इस फिल्म के जरिए अभिनेत्री दिशा पाटनी पहली बार विशेष फिल्म्स के साथ काम कर रही हैं। फिल्म का निर्देशन नितिन कक्कर ने किया है और इसकी कहानी बिलाल सिद्दीकी ने लिखी है।

शूटिंग और लोकेशंस

इस फिल्म की शूटिंग राजस्थान और दक्षिण-पूर्व एशिया की खूबसूरत और भव्य जगहों पर की गई है। मेकर्स का कहना है कि फिल्म भले ही बड़े पैमाने पर बनी है, लेकिन इसकी कहानी में भावनाओं और बेहतरीन संगीत का पूरा तालमेल है। यह फिल्म इसी साल 14 अगस्त 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज होने के लिए पूरी तरह तैयार है।

हीर सारा और पुडुचेरी को मिला कीर्ति कुल्हारी का साथ, मानवी गगरू के लिए लिखी खास बात

अभिनेत्री पत्रलेखा और मानवी गगरू स्टारर कॉमेडी ड्रामा 'हीर सारा और पुडुचेरी' बड़े पर्दे पर प्रदर्शित हो चुकी है। शुक्रवार को अभिनेत्री कीर्ति कुल्हारी ने फिल्म और मानवी गगरू को बधाई देते हुए एक दिलचस्प पोस्ट शेयर किया। अभिनेत्री ने इंस्टाग्राम पर फिल्म का क्लिप शेयर करते हुए लिखा, 'इस खास दिन पर मानवी गगरू को दिल से ढेर सारी बधाई और शुभकामनाएं। आप पहले से भी ज्यादा चमकें और फिल्म को खूब प्यार मिले, यही कामना है। ढेर सारा प्यार, बड़ी-सी झप्पी और हीर सारा की पूरी टीम को शुभकामनाएं। दोस्तों, जाइए और इस खूबसूरत फिल्म को अपने नजदीकी सिनेमाघरों में देखकर अपना प्यार दीजिए।' निर्देशक कार्तिक चौधरी द्वारा बनाई गई यह फिल्म दो महिलाओं की भावनात्मक यात्रा पर आधारित है, जो व्यक्तिगत संकटों और सामाजिक दबावों के बीच जीवन में मुक्ति और नया उद्देश्य तलाशती हैं। सारा (पत्रलेखा) एक महत्वाकांक्षी बाइकर हैं और हीर (मानवी गागरू) एक अन्य महिला हैं जो जीवन के अलग-अलग दौर से गुजर रही हैं। सारा अपनी मां को खोजने के लिए इंदौर से पांडिचेरी (पुडुचेरी) की यात्रा पर निकलती हैं, जबकि हीर अपने बॉयफ्रेंड की शादी को रोकने का प्रयास करती है। यह फिल्म पहचान, महिला दोस्ती और सामाजिक अपेक्षाओं के बंधनों से मुक्त होकर खुद को फिर से खोजने के साहस का जश्न मनाती है। फिल्म का निर्माण मेघा क्रिएशन्स (दिनेश सोनी), नेक्स्ट लेवल प्रोडक्शंस (नीरज रुहिल और सुभव शर्मा) और ऑप्टिकस इंक ने मिलकर किया है। फिल्म को सोनी म्यूजिक इंडिया का सहयोग मिला है। फिल्म में आरिफ जकारिया, निशंक वर्मा और श्वेता साल्वे भी अहम किरदारों में नजर आ रहे हैं। फिल्म को दर्शकों की तरफ से मिली-जुली प्रतिक्रिया मिल रही है। उनका मानना है कि फिल्म का मूल विचार बहुत अच्छा था, लेकिन पटकथा थोड़ी सुस्त है और इसमें रोमांच या हास्य की कमी है। कई विषयों को छूने के बावजूद, फिल्म उनमें गहराई तक नहीं उतर पाती।

कश्मीर की ओर बार-बार लौटने का मन होता है, पहले का कोई कनेक्शन सा लगता है

जोया अख्तर की फिल्म 'द आर्चीज' से ओटीटी और आलिया भट्ट संग फिल्म 'जिगरा' से बड़े पर्दे पर दस्तक देने वाले युवा कलाकार वेदांग रैना अब इम्तियाज अली की पीरियड लव स्टोरी 'मैं वापस आऊंगा' में अहम भूमिका में नजर आएंगे। खास बात यह है कि वेदांग अपनी हर फिल्म में अदाकारी के साथ-साथ गायिकी का हुनर भी दिखा रहे हैं। इस फिल्म में तो एआर रहमान जैसे दिग्गज कंपोजर के लिए मसकारा जैसे रूहानी गीत को आवाज देना वेदांग सपना सच होने जैसा मानते हैं।

रहमान सर के लिए गाने पर यकीन नहीं हुआ अपनी गायिकी के इस सफर और एआर रहमान के लिए गाने को लेकर वह कहते हैं, 'मुझे पता नहीं ये कैसे हो रहा है, क्योंकि मैंने कभी किसी डायरेक्टर को खुद ये बात नहीं बताई है कि मैं गाना गाता हूं। यह सब बस हो गया। जोया (अख्तर) के साथ भी ये अचानक हुआ था कि मैंने आर्चीज में एक छोटे सा हिस्सा गाया था। फिर वासन बाला सर की भी एक सोच थी तो जिगरा में भी गाने का मौका मिला और अब रहमान सर के लिए गाना तो किसी भी कलाकार के लिए सपना सच होने जैसा है। मुझे ये मौका मिलना बहुत बड़ी बात है, जबकि मैं हिंदुस्तानी क्लासिकल में ट्रेंड सिंगर भी नहीं हूं। हालांकि, मैंने अपनी जिंदगी में स्टेज पर बहुत गाया, बहुत परफॉर्म किया है तो यह अनुभव वहीं से आता है। फिर भी ऐसा मौका मिलने की तो मैं सोच भी नहीं सकता था। मुझे कभी-कभी इम्पोस्टर सिंड्रोम (खुद की प्रतिभा पर शक) होता था और लगता था कि मैं ये मौका डिजर्व नहीं करता।'

सच्चा प्यार कभी प्रैक्टिकल नहीं हो सकता

फिल्म में 1947 से पहले का दौर और मोहब्बत है, ऐसे में उस दौर को जीते हुए क्या वेदांग को कोई ऐसी चीज लगी कि काश वो आज के तेज रफ्तार दौर में भी होती? इस पर उनका कहना है, 'उस वक्त का प्यार करने का तरीका। मतलब अहसास तो अब भी वही है लेकिन अब रिश्ते या प्यार के दायरे थोड़े बदल गए हैं। जैसे अभी हम मेसेज करते हैं, तब चिट्ठियां लिखते थे। तब लोग अनकही बातों में, इशारों में मन के भाव समझते थे, वैसा वाला प्यार अब थोड़ा मिसिंग है तो अगर हम उसे वापस ला सकें तो अच्छा होगा।' क्या द्द्गद्द' पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले वेदांग मानते हैं कि अब प्यार प्रैक्टिकल हो चुका है? इस पर वह दो टूक कहते हैं, 'सच्चा प्यार प्रैक्टिकल हो ही नहीं सकता। प्यार एक अहसास है, जो हर दौर में एक सा ही होता है, बस अब उस अहसास के इर्द गिर्द चीजें बदल गई हैं।'

कश्मीर लौटने का मन करता है

मैं वापस आऊंगा की तर्ज पर क्या कोई ऐसी जगह या वक्त हैं जहां वेदांग लौटना चाहेंगे? इस बारे में उन्होंने बताया, 'मेरे लिए कश्मीर वह जगह है। मैं कश्मीरी हूं, मेरे माता-पिता कश्मीरी हैं और मैं अपनी जिंदगी में कश्मीर काफी देर से गया। मैं 22 या 23 साल का था और वहां जाकर मुझे एक अलग सा नॉस्टैल्जिया महसूस हुआ। जब मैं श्रीनगर गया तो वहां मेरे साथ पापा- मम्मी और मौसी थी। वे ऐसे बता रहे थे कि यहां पर डल झील था। हम जब यहां अपने नाना-नानी के घर आते थे तो यहां खेलते थे। यहां पर चाय की दुकान होती थी और मैं यकीन ही नहीं कर पाया था कि किसी का बचपन डल झील के किनारे बीता होगा। मुझे वो सब परियों की कहानी जैसा लग रहा था। मुझे उस जगह से,एक नॉस्टैल्जिया महसूस हो रहा था, जहां मैं पहले कभी नहीं गया, शायद कोई पहले का कनेक्शन होगा तो वहां जाने का मेरा बहुत मन करता है।'

नर्वस था, पर आलिया ने खुले दिल से अपनाया

वेदांग ने हमसे जिगरा में आलिया भट्ट संग काम करने का अनुभव भी साझा किया। बकौल वेदांग, 'वह मेरी दूसरी फिल्म थी और मैं बहुत नर्वस था कि मैं आलिया भट्ट के साथ स्क्रीन शेयर कर रहा हूं। पहली ही फिल्म के बाद मैं एक बिल्कुल अलग माहौल में था, लेकिन आलिया ने मेरी ओर जितनी गर्मजोशी दिखाई, जितनी खुले दिल से मुझे अपनाया और सहज कराया, वह अहसास मुझे हमेशा रहेगा। उसके लिए मैं उनको हमेशा याद रखूंगा। वह हमारी बहुत ही प्यारी दोस्त बनी। वह हमेशा मेरी शुभचिंतक हैं, जिसके लिए मैं हमेशा उनको याद रखूंगा।'

राजधानी के नया रायपुर में खुलेगा तहसील दफ्तर, सेक्टर–19 के पर्यावास भवन में होगा संचालन

नई तहसील में 6 राजस्व निरीक्षक मंडल और नए तहसील क्षेत्र में कुल 39 गांवों को किया गया शामिल

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

नया रायपुर (अटल नगर) में लंबे समय से प्रतीक्षित तहसील दफ्तर के लिए स्थान का चयन कर लिया गया है। सूत्रों के अनुसार यह तहसील कार्यालय सेक्टर–19 स्थित पर्यावास भवन में शुरू किया जाएगा। इसके लिए तैयारियां तेज कर दी गई हैं और प्रशासनिक स्तर पर जरूरी प्रक्रियाएं पूरी की जा रही हैं। तहसील दफ्तर खुलने के बाद नया रायपुर और आसपास के 39 गांवों के ग्रामीणों को बड़ी राहत मिलने की उम्मीद है। अब तक इन क्षेत्रों के लोगों को राजस्व संबंधी कार्यों के लिए रायपुर और जिले के अन्य तहसील कार्यालयों तक लंबी दूरी तय करनी पड़ती थी, जिससे समय और धन दोनों का नुकसान होता था।

नवा रायपुर (अटल नगर) को पहले ही स्वतंत्र तहसील का दर्जा दिया जा चुका है। राजस्व एवं आपदा प्रबंधन विभाग द्वारा दिसंबर 2025 में इस संबंध में आधिकारिक अधिसूचना जारी की गई थी। यह कदम जिले में प्रशासनिक ढांचे के विस्तार की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है। नई तहसील में 6 राजस्व निरीक्षक मंडल शामिल किए गए हैं, जिनमें पलौद, मंदिर हसौद, केंद्री, तोरला, सेरीखेरी, रायपुर–18 और कांदुल क्षेत्र आते हैं। इसके साथ ही 20 पटवारी हल्कों को भी इसमें शामिल किया गया है, जिनमें विभिन्न गांव और क्षेत्रीय हल्के जैसे पलौद 20, 21, 23, 24, 25, 26, मंदिर हसौद 15 और 22, केंद्री 13 से 19, तोरला 01 और 02, सेरीखेरी 16, 39, 40, रायपुर–18 और कांदुल 51 प्रमुख हैं।

इसके अलावा नए तहसील क्षेत्र में कुल 39 गांवों को शामिल किया गया है। इनमें पलौद, परसदा, पसौद, रीको, सेंद, चीचा, चरौदा, रमचंडी, कबाबांधा, झांझ, नवागांव, खपरी, कुहेरा, राखी कोटनी, कोटारभाठा, तांदुल, मंदिर हसौद, छतौना, केंद्री, बेंदी, परसट्ठी, निमोरा, उपरवारा, तुता, झांकी, खंडवा, भेलवाडीह, पचेरा, तोरला, चेरिया, पौता, बंजारी, तेंदुआ, कुर्रा, सेरीखेरी, नकटी, टेमरी, धरमपुरा, बनरसी, रायपुर–18, कांदुल और माना शामिल हैं। प्रशासन के अनुसार, इस नई व्यवस्था से ग्रामीणों को अपने राजस्व संबंधी कार्यों के लिए अब दूर नहीं जाना पड़ेगा। जाति, निवास, भूमि रिकॉर्ड, नामांतरण, सीमांकन और अन्य दस्तावेजों के लिए स्थानीय स्तर पर ही सुविधा उपलब्ध हो सकेगी। इससे आम जनता का समय बचेगा और व्यवस्था अधिक सरल होगी।

अधिसूचना जारी होने के बाद इस क्षेत्र के ग्रामों को शामिल करने को लेकर सुझाव और दावा–आपत्तियां भी मंगाई गई थीं। इसके लिए 60 दिनों का समय दिया गया था। सूत्रों के अनुसार इस अवधि में कुछ आपत्तियां और सुझाव प्राप्त हुए थे, जिनका निपटारा कर दिया गया है। रायपुर जिले की वर्तमान तहसील रायपुर, मंदिर हसौद, गोबरा नवापारा और अभनपुर की सीमाओं में संशोधन कर नवा रायपुर अटल नगर तहसील का गठन किया गया है। नया रायपुर में तहसील दफ्तर के संचालन को लेकर प्रशासनिक स्तर पर तैयारियां जारी हैं, हालांकि इसके औपचारिक शुभारंभ की तारीख अभी तय नहीं हुई है।

अपर कलेक्टर कीतिर्मान सिंह राठौर ने बताया कि एनआरडीए द्वारा स्थान चिन्हांकित कर लिया गया है और आगे की प्रक्रिया प्रगति पर है। स्थानीय लोगों में इस घोषणा को लेकर उत्साह देखा जा रहा है, क्योंकि लंबे समय से वे नजदीकी प्रशासनिक सुविधा की मांग कर रहे थे। उम्मीद की जा रही है कि तहसील कार्यालय शुरू होने के बाद क्षेत्रीय विकास और प्रशासनिक कार्यों में तेजी आएगी।

खास खबर

वायुसेना के विशेष विमान से पहुंचे NEET-UG के प्रश्नपत्र, सुरक्षा के बीच स्ट्रांग रूम में बंद

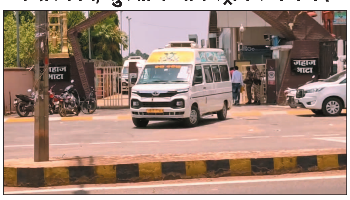

नई दृष्टिबिंदु / जगदलपुर

देशभर में 21 जून को आयोजित होने वाली नीट यूजी 2026 री–एग्जाम को लेकर तैयारियां तेज कर दी गई हैं। इस बीच छत्तीसगढ़ के जगदलपुर में सोमवार को वायु सेना के विशेष विमान से प्रश्नपत्रों को पहुंचाया गया। प्रश्नपत्रों को सीलबंद पेटियों में कड़ी सुरक्षा व्यवस्था के बीच विमान से उतारा गया। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार प्रश्नपत्रों की बंद पेटी को विमान से उतारने के बाद कड़ी सुरक्षा में सीधे सुरक्षित स्ट्रॉन्ग रूम तक रवाना किया गया। हर चरण में गोपनीयता और सुरक्षा का विशेष ध्यान रखा गया ताकि किसी भी प्रकार की चूक की संभावना न रहे। पिछले वर्षों में दो बार सामने आए पेपर लीक मामलों के बाद इस बार प्रशासन अतिरिक्त सतर्क नजर आ रहा है।

एडमिट कार्ड हुआ जारी : एनटीए ने नीट यूजी 2026 री–एग्जाम के एडमिट कार्ड जारी कर दिए हैं. 21 जून को सुबह परीक्षा आयोजित की जाएगी। अभ्यर्थी neet.nta.nic. in पर अपने लॉगिन विवरण जैसे आवेदन संख्या और पासवर्ड का उपयोग कर एडमिट कार्ड डाउनलोड कर सकते हैं। स्टूडेंट्स को कहा गया है कि एडमिट कार्ड डाउनलोड करने से पहले रिफंड के लिए अपने बैंक खाते के विवरण को भी सत्यापित कर लें।

शाला प्रवेश उत्सव को जनआंदोलन बनाने आगे आएं जनप्रतिनिधि – मुख्यमंत्री साय

रायपुर। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने प्रदेश के सभी जनप्रतिनिधियों को पत्र लिखकर 16 जून से 27 जून 2026 तक आयोजित होने वाले शाला प्रवेश उत्सव में सक्रिय सहभागिता का आह्वान किया है। मुख्यमंत्री ने कहा है कि शिक्षा किसी भी समाज और राष्ट्र की प्रगति का सबसे सशक्त आधार है तथा यह हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है कि प्रदेश का कोई भी बच्चा शिक्षा से वंचित न रहे।

श्री साय ने अपने पत्र में प्रदेश के समस्त विद्यार्थियों, अभिभावकों, शिक्षकों एवं शिक्षा से जुड़े सभी लोगों को नवीन शैक्षणिक सत्र की शुभकामनाएं देते हुए कहा है कि नए शैक्षणिक सत्र के साथ प्रदेशभर में शाला प्रवेश उत्सव का आयोजन किया जा रहा है। इस अभियान का उद्देश्य प्रत्येक बालक–बालिका का विद्यालय में प्रवेश तथा नियमित अध्ययन सुनिश्चित करना है। मुख्यमंत्री ने मंत्रीगण, सांसदगण, विधायकगण, जिला पंचायत एवं जनपद पंचायत अध्यक्ष, महापौर तथा नगरीय निकायों के जनप्रतिनिधियों से आग्रह किया है कि वे अपने क्षेत्र के किसी विद्यालय में सुविधानुसार उपस्थित होकर अभियान में सहभागी बनें तथा ऐसे बच्चों की पहचान और नामांकन के लिए प्रेरित करें, जो अभी तक विद्यालय से नहीं जुड़े हैं अथवा बीच में पढ़ाई छोड़ चुके हैं। उन्होंने कहा कि जनप्रतिनिधियों की सहभागिता इस अभियान को जनआंदोलन का स्वरूप प्रदान करेगी।

श्री साय ने पत्र में उल्लेख किया है कि राज्य सरकार विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार के लिए प्रतिबद्ध है। पीएम श्री विद्यालयों के माध्यम से उत्कृष्ट शिक्षण वातावरण विकसित किया जा रहा है तथा वर्ष 2026 से 150 विवेकानंद विद्यालयों की स्थापना कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के नए मानक स्थापित किए जा रहे हैं। नई शिक्षा नीति–2020 के अनुरूप शासकीय विद्यालयों को आधुनिक, तकनीक–संपन्न और छात्र–केंद्रित संस्थानों के रूप में विकसित किया जा रहा है। विद्यार्थियों को मध्यान्ह भोजन, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, गणवेश तथा बालिकाओं के लिए सरस्वती साइकिल जैसी सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही हैं, ताकि कोई भी बच्चा आर्थिक कारणों से शिक्षा से वंचित न रहे।

विस अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह ने किया छत्तीसगढ़ महतारी व शहीद खोण्डे की प्रतिमा का अनावरण

भाटापारा में गौरव का दिन

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. रमन सिंह बलौदाबाजार–भाटापारा जिले के अपने एक दिवसीय प्रवास पर भाटापारा पहुंचे। इस दौरान उन्होंने शहर को एक बड़ी सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सौगात देते हुए छत्तीसगढ़ महतारी और देश के वीर सपूत शहीद श्रीकृष्ण गजानन खोण्डे की भव्य प्रतिमाओं का अनावरण किया। शहीद को नमन करते हुए डॉ. रमन सिंह ने कहा कि शहीद श्रीकृष्ण गजानन खोण्डे की यह प्रतिमा आने वाली पीढ़ियों और युवाओं के लिए राष्ट्रसेवा की प्रेरणा बनेगी। देश उनके सर्वोच्च बलिदान को कभी नहीं भूल सकता।

इस गरिमामय समारोह में राज्य के राजस्व मंत्री टंकराम वर्मा, पूर्व विधानसभा अध्यक्ष गौरीशंकर अग्रवाल समेत कई वरिष्ठ जनप्रतिनिधि और प्रशासनिक अधिकारी विशेष रूप से उपस्थित रहे। इस संवेदनशील अवसर पर विधानसभाध्यक्ष डॉ. सिंह ने शहीद फ्लाइट लेफ्टिनेंट के परिजनों (पुत्री प्रिया खोण्डे और भाई प्रभाकर खोण्डे) से बेहद आत्मीयता के साथ मुलाकात की और उनका कुशलक्षेम जाना।

छत्तीसगढ़ महतारी चौक पर नमन

अपने प्रवास के दौरान डॉ. रमन सिंह सबसे पहले छत्तीसगढ़ महतारी चौक पहुंचे, जहां उन्होंने नवनिर्मित छत्तीसगढ़ महतारी की प्रतिमा का अनावरण किया। विधानसभा अध्यक्ष ने प्रतिमा पर माल्यार्पण कर एवं पारंपरिक विधि–विधान से पूजा–अर्चना कर राज्य की सुख–समृद्धि की कामना की।

1971 के युद्ध के नायक शहीद खोण्डे को दी श्रद्धांजलि

इसके पश्चात विधानसभा अध्यक्ष भाटापारा स्थित शहीद श्रीकृष्ण गजानन खोण्डे परिसर पहुंचे। वहां उन्होंने वर्ष 1971 के भारत–पाकिस्तान युद्ध में देश के लिए अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर फ्लाइट लेफ्टिनेंट शहीद श्रीकृष्ण गजानन खोण्डे की प्रतिमा का अनावरण किया।

समारोह में कई दिग्गज रहे मौजूद

इस ऐतिहासिक गरिमामय कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मण्डल के अध्यक्ष अनुराग सिंहदेव, छत्तीसगढ़ राज्य सहकारी बैंक के अध्यक्ष केदारनाथ गुप्ता, पूर्व विधायक शिवरतन शर्मा और डॉ. सनम जांगड़े उपस्थित थे। स्थानीय प्रशासन और जनप्रतिनिधियों में जिला पंचायत अध्यक्ष आकांक्षा जायसवाल, नगर पालिका अध्यक्ष अश्वनी शर्मा, जनप्रतिनिधिगणों के साथ–साथ बलौदाबाजार कलेक्टर कुलदीप शर्मा, पुलिस अधीक्षक ओपी शर्मा और भारी संख्या में नगरवासी मौजूद रहे।

प्रदेश के सभी ग्राम पंचायतों में 24 जून को होगी ग्राम सभा

आवास प्लस 2 .0 की स्थायी प्रतीक्षा सूची सहित विभिन्न विषयों पर होगी चर्चा

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग द्वारा ग्राम पंचायतों को ग्राम सभाओं के माध्यम से ग्रामीण विकास, पंचायतों की वित्तीय स्थिति, आवास योजनाओं, रोजगार, सामाजिक मुद्दों और स्थानीय विकास कार्यों जैसे जनहित से जुड़े विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर व्यापक चर्चा एवं निर्णय लेने का अधिकार दिया गया है। छत्तीसगढ़ के सभी ग्राम पंचायतों में 24 जून 2026 को ग्राम सभाओं का आयोजन किया जाएगा। ग्राम सभाओं में आवास प्लस 2.0 की स्थायी प्रतीक्षा सूची सहित विभिन्न विषयों पर चर्चा की जाएगी।

वीबी जी राम जी के संबंध में ग्रामीणों को दी जाएगी जानकारी

ग्राम सभा में पूर्व बैठक के निर्णयों के पालन प्रतिवेदन, पंचायतों के आय–व्यय की समीक्षा एवं अनुमोदन, विभिन्न योजनाओं से स्वीकृत कार्यों की प्रगति, तथा अन्य विकासात्मक विषयों पर भी चर्चा की जाएगी। ग्राम सभाओं में विकसित भारत, रोजगार एवं आजीविका मिशन ग्रामीण (वीबी जी राम जी) के संबंध में भी ग्रामीणों को जानकारी दी जाएगी तथा इसके क्रियान्वयन पर चर्चा होगी। योजना के तहत ग्रामीण परिवारों को रोजगार की गारंटी 100 दिनों से बढ़ाकर 125 दिन किए जाने, बेरोजगारी भत्ते के बेहतर प्रावधान, समय पर मजदूरी भुगतान और ग्राम सभा आधारित विकास योजनाओं की जानकारी दी जाएगी।

आवास के लिए पात्र हितग्राहियों की प्राथमिकता सूची होगी तैयार

ग्राम सभा में विशेष रूप से आवास प्लस 2.0 सर्वेक्षण से प्राप्त सिस्टम जनरेटेड स्थायी प्रतीक्षा सूची (पीडब्ल्यूएल) का अवलोकन एवं वाचन किया जाएगा। ग्राम सभा द्वारा शासन की मार्गदशिर्का एवं एसओपी के अनुसार पात्र हितग्राहियों की प्राथमिकता सूची तैयार की जाएगी तथा ग्रामीणों से प्राप्त दावे–आपत्तियों को नियमानुसार प्राप्त कर निराकरण की प्रक्रिया पूरी की जाएगी। ग्राम सभा से अनुमोदन के बाद स्थायी प्रतीक्षा सूची को आवास सॉफ्टवेयर में अपलोड किया जाएगा।

ग्राम सभा में अधिक से अधिक सहभागिता हेतु ग्रामीणों से अपील

प्रदेश की सभी ग्राम पंचायतों से ग्राम सभा में अधिक से अधिक ग्रामीणों की सहभागिता सुनिश्चित करने तथा ग्राम विकास से जुड़े निर्णयों में जनभागीदारी बढ़ाने की अपील की गई है। ग्राम सभा में पिछली बैठकों में पारित प्रस्तावों की समीक्षा, पंचायतों के आय–व्यय का अनुमोदन, विभिन्न विकास कार्यों की प्रगति, आवास प्लस 2.0 की प्रतीक्षा सूची तथा पंचायत संपत्तियों के प्रबंधन जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा होगी। इसके साथ ही पंचायत उन्नति सूचकांक 2.0 के परिणामों को भी ग्रामीणों के सामने प्रस्तुत किया जाएगा।

मुख्यमंत्री साय की घोषणा पर त्वरित अमल, ग्रामीणों की मांगों को मिली स्वीकृति

सुशासन तिहार में किए गए वादे हो रहे पूरे, पंचायत भवन, पीडीएस भवन और मुक्तिधाम निर्माण को मिली मंजूरी

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में आयोजित सुशासन तिहार केवल जनसंवाद का मंच नहीं, बल्कि जनआकांक्षाओं को शीघ्रता से पूरा करने का प्रभावी माध्यम बनकर उभरा है। आम नागरिकों की समस्याओं और मांगों के त्वरित निराकरण के लिए राज्य शासन एवं जिला प्रशासन द्वारा लगातार संवेदनशीलता और तत्परता के साथ कार्य किया जा रहा है। इसी कड़ी में मुख्यमंत्री विष्णु देव साय द्वारा सरगुजा प्रवास के दौरान ग्रामीणों की मांगों पर की गई घोषणाओं को शीघ्र स्वीकृति प्रदान कर अमल में लाया गया है।

उल्लेखनीय है कि 03 मई 2026 को मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय सुशासन तिहार के अंतर्गत सरगुजा जिले के बतौली विकासखंड स्थित ग्राम पंचायत सिलमा के शांतिपारा पहुंचे थे। जन चौपाल में ग्रामीणों से सीधे संवाद करते हुए उन्होंने क्षेत्र की आवश्यकताओं और समस्याओं की जानकारी ली तथा विभिन्न विकास कार्यों की घोषणाएं की थीं।

मुख्यमंत्री की घोषणाओं के अनुरूप जिला प्रशासन ने त्वरित कार्रवाई करते हुए विभिन्न निर्माण कार्यों को स्वीकृति प्रदान की है। ग्राम सिलमा में डीएमएफ एवं मनरेगा के अभिसरण से 18.30 लाख रुपये की लागत से नवीन पंचायत भवन, डीएमएफ मद से 2.50 लाख रुपये की लागत से मुक्तिधाम तथा मनरेगा मद से 11.63 लाख रुपये की लागत से नवीन पीडीएस भवन निर्माण को मंजूरी दी गई है।

इसी प्रकार ग्राम कुनकुरीकला में डीएमएफ एवं मनरेगा के अभिसरण से 18.30 लाख रुपये की लागत से नवीन पंचायत भवन निर्माण की स्वीकृति प्रदान की गई है।

ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की घोषणाओं पर त्वरित अमल के लिए प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उनका आभार जताया है। उनका कहना है कि सुशासन तिहार के माध्यम से शासन और प्रशासन सीधे जनता तक पहुंचकर न केवल समस्याएं सुन रहा है, बल्कि उनके समाधान के लिए समयबद्ध कार्रवाई भी सुनिश्चित कर रहा है।

राज्य शासन की मंशा के अनुरूप जिला प्रशासन द्वारा सुशासन तिहार के दौरान प्राप्त मांगों और जनसमस्याओं के निराकरण के लिए लगातार प्रभावी कदम उठाए जा रहे हैं, जिससे विकास कार्यों का लाभ समय पर आमजन तक पहुंच रहा है और सुशासन की अवधारणा जमीनी स्तर पर साकार हो रही है।

मुख्य सचिव विकासशील ने ली उच्च स्तरीय बैठक, स्वस्थ आयु के लिए योग थीम निर्धारित

छत्तीसगढ़ में 12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की तैयारियां तेज

नई दृष्टिबिंदु / रायपुर

छत्तीसगढ़ में आगामी 21 जून को 12वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का भव्य आयोजन किया जाएगा। इस वर्ष योग दिवस की थीम स्वस्थ आयु के लिए योग निर्धारित की गई है। आयोजन को व्यापक और सफल बनाने के लिए राज्य के मुख्य सचिव विकासशील ने मंत्रालय (महानदी भवन) में विभिन्न विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों की एक उच्च स्तरीय बैठक ली और तैयारियों की समीक्षा की।

ग्राम पंचायत से लेकर जिला स्तर तक जन–भागीदारी

मुख्य सचिव विकासशील ने निर्देश दिए कि भारत सरकार के आयुष मंत्रालय के दिशा–निर्देशों के अनुरूप राज्य के सभी जिलों में योग कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए। राज्य की प्रत्येक ग्राम पंचायत के प्रमुख स्थलों पर अनिवार्य रूप से योगाभ्यास कार्यक्रम आयोजित करने के लिए सभी कलेक्टर्स को निर्देश दिए गए हैं। कार्यक्रम के सफल क्रियान्वयन के लिए आयुष विभाग और समाज कल्याण विभाग के अधिकारियों को आपस में बेहतर समन्वय के साथ काम करने को कहा गया है। जिला स्तर पर अधिक से अधिक जन–सहभागिता सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए गए हैं।

NEET परीक्षार्थियों का रखा जाएगा विशेष ध्यान

मुख्य सचिव ने अधिकारियों को सचेत करते हुए कहा कि 21 जून को ही नेशनल टेस्टिंग एजेंसी (NTA) द्वारा नीट (NEET) की पुनः परीक्षा भी आयोजित की जा रही है। इसे ध्यान में रखते हुए यह सुनिश्चित किया जाए कि योग दिवस के आयोजनों के कारण नीट परीक्षा केंद्रों और परीक्षाथियों को किसी भी तरह की असुविधा या तकलीफ न हो।

गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने की तैयारी और डिजिटल पंजीयन

आयुष विभाग के अधिकारियों के अनुसार, भारत सरकार द्वारा इस बार व्यापक जनभागीदारी के निर्देश हैं। 14 जून 2026 से सुबह 6.15 बजे से 7.35 बजे तक ऑनलाइन योग अभ्यास सत्र के माध्यम से गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाने का प्रयास किया जा रहा है। आम नागरिकों की सहभागिता बढ़ाने के लिए टोल–फ्री नंबर 1800–315–7008 जारी किया गया है, जिस पर मिस्ड कॉल देकर आसानी से पंजीयन कराया जा सकता है। अधिकारियों ने बताया कि आयुष मंत्रालय द्वारा योग संगम पोर्टल–2026 प्रारंभ किया गया है। जिसके माध्यम से विभिन्न संस्थाएं, विभाग, शैक्षणिक संस्थान, स्थानीय निकाय, स्वायत्तशासी संस्थाएं, सार्वजनिक उपक्रम योग संस्थान एवं सामुदायिक संगठन दिनांक 21 जून 2026 को आयोजित होने वाले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रमों के लिए पंजीयन एवं कार्यक्रम के उपरांत विवरण एवं फोटोग्राफ अपलोड किये जा सकते है। शासन के समस्त विभागों के सचिव, विभागाध्यक्ष, संभागायुक्त एवं कलेक्टरों को अधीनस्थ संस्थाओं, कार्यालयों को उक्त पोर्टल पर पंजीयन कराने एवं आयोजन उपरांत कार्यक्रम की जानकारी पोर्टल में अपलोड करने हेतु निर्देशित करने कहा गया है। पंजीयन हेतु वेब पोर्टल https//:yoga.ayush.gov.in/yoga-sangam है।

सरगुजा में होगा राज्य स्तरीय मुख्य आयोजन

बैठक में अधिकारियों ने बताया कि इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का संभावित राज्य स्तरीय मुख्य कार्यक्रम सरगुजा जिले में आयोजित होगा। मुख्य सचिव ने अधिकारियों को इसके लिए सभी आवश्यक और पुख्ता तैयारियां समय से पूरी करने के निर्देश दिए हैं।

मंत्रालय में आयोजित इस महत्वपूर्ण बैठक में वन एवं जलवायु परिवर्तन विभाग के अपर मुख्य सचिव मनोज कुमार पिंगुआ, गृह विभाग की प्रमुख सचिव श्रीमती निहारिका बारिक सिंह, स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. कमलप्रीत सिंह, आवास एवं पर्यावरण विभाग के सचिव अंकित आनंद समेत नगरीय प्रशासन, वाणिज्यिक कर, कृषि, श्रम और आयुष विभाग के सचिव एवं योग आयोग के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

मुद्दे की बात

डॉ.सोनाली चक्रवर्ती के साथ

हमने बच्चों को टोकना क्यों बंद कर दिया ?

क्या आप बच्चों को डांटते हैं ? शायद नहीं। क्योंकि आज 'बच्चों को न डांटो' ही नव सामान्य (न्यू नॉर्मल) बन चुका है। हमने इतनी विकृतियों को 'नॉर्मल' बना दिया है कि बच्चों को यह समझ ही नहीं रहा कि 'सामान्य' और 'सभ्य' होता क्या है। जब सही-गलत, अच्छा-बुरा, सत्य-असत्य का भेद ही धुंधला पड़ गया हो, तो वहाँ मूल्यों, आदर्शों और भावनाओं का ठहरना लगभग असंभव हो जाता है।

बच्चों को रोकना-टोकना तो कब का बंद हो चुका। "बेटा, ऐसा नहीं करते" - ये वाक्य अब माता-पिता के शब्दकोश से निकल गया है। घर में, एयरपोर्ट पर, मॉल में, बाजार में - दो साल से सोलह साल तक के बच्चे जिद करते, तुनकते, चीखते, चिल्लाते, जमीन पर लोटते दिखाई देते हैं। और हम इसे 'न्यू नॉर्मल' कहकर स्वीकार कर लेते हैं।

माता-पिता का भय और अनुशासन दोनों ही बच्चों को छू नहीं पाते। उल्टा, माता-पिता 'कूल पेरेंट' बनने की इस सनक को ही आधुनिकता मान बैठे हैं। ये बहुत पुरानी बात नहीं है। एक समय था जब केवल अपने ही नहीं, पड़ोस या रिश्तेदारी के बच्चों को भी गलत करते देख टोक देना सामान्य शिष्टाचार था। बच्चों के मन में डांट का भय नहीं, बड़ों के प्रति सम्मान था। पान की गुमटी पर खड़े किशोर को या बाजार में किसी लड़की से ऊँची आवाज में बात करते लड़के को देखकर कोई परिचित टोक देता था। आज हमने अपनी ही संतान के अनुशासन की डोर अपने हाथों से ढीली कर दी है।

बच्चों का मित्र बनना अच्छी बात है, पर इसका अर्थ यह कदापि नहीं कि वे बड़ों का लिहाज करना भूल जाएं। बचपन से उन्हें विज्ञान और गणित के साथ-साथ 'भाषा का शील' सिखाना भी उतना ही अनिवार्य है। एक समय था जब सभ्यता की पहचान शुद्ध और शालीन भाषा से होती थी। आज गालियों को 'अपनापन' का पर्याय मान लिया गया है। फिर भी हम निरंतर प्रयासरत हैं कि बच्चों को यह बोध हो कि 'माँ' शब्द गालियों में प्रयुक्त होने के लिए नहीं बना है।

हाल में एक शिक्षिका ने व्यथा सुनाई - "मेरा पुत्र दुर्ग-भिलाई के एक प्रतिष्ठित स्कूल में पढ़ता है। वहाँ बच्चे खुलेआम गालियाँ देते हैं, शौचालय की दीवारों पर अश्लील शब्द लिखते हैं। जब मैंने उप-प्राचार्य से शिकायत की और कहा कि यदि यह नहीं रुका तो मैं स्कूल बदल दूंगी, तो उनका उत्तर चौंका देने वाला था - 'आप इतनी सी बात पर स्कूल छोड़ देंगी ? ये तो आजकल नॉर्मल है। बच्चे तो ऐसा बोलते ही हैं। इसमें स्कूल बदलने वाली कौन सी बात है !' यही तो चिंता का विषय है - हमें यह विस्मय से बाहर निकलना होगा कि आखिर हमारे लिए 'नॉर्मल' रह क्या गया है ?

शायद इसी कारण आज स्टैंड-अप कॉमेडियन मंचों से माताओं-बहनों को अपशब्द कहते हैं, और श्रोता हँसते हैं। क्योंकि उनके बचपन में ही किसी ने नहीं बताया कि यह गलत है, यह अस्वीकार्य है। दूसरों का सम्मान करना जितना आवश्यक है, उतना ही आवश्यक है स्वयं का सम्मान बचाए रखना। इसके लिए बच्चों को अनुशासन का अर्थ समझाना होगा। और अनुशासन की डोर तभी मजबूत होगी जब माता-पिता स्वयं अनुशासित होंगे। बच्चा माता-पिता की बातें कम सुनता है, उनके आचरण को अधिक देखता है। वह आपके शब्दों का नहीं, आपके प्रतिबिंब का अनुगमन करता है।

बिजली टावर पर विभाग के कर्मचारी का शव लटका मिला, घरेलू विवाद की आशंका, जांच जारी

बालोद। जिले के गुरूर थाना क्षेत्र में एक दुखद घटना सामने आई है। एक बिजली कर्मचारी ने बिजली टावर पर फांसी लगाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली। इस घटना से पूरे इलाके में हड़कंप मच गया है। यह घटना गुरूर थाना क्षेत्र के ग्राम बोहारडीह की है। मृतक की पहचान 40 वर्षीय देवेंद्र साहू के रूप में हुई है। वह बिजली विभाग में एक नियमित कमर्चारी के तौर पर कार्यरत था। देवेंद्र ने कोरबा-राजहरा मुख्य मार्ग पर स्थित एक बड़े बिजली टावर में फांसी लगाई। सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार आत्महत्या की वजह घरेलू विवाद बताई जा रही है। हालांकि, घटना के वास्तविक कारणों का अभी तक पूरी तरह से खुलासा नहीं हो पाया है। ग्राम बोहारडीह के सरपंच राजेंद्र साहू ने बताया कि ग्रामीणों ने टावर पर शव लटका देखा। उन्होंने तत्काल स्थानीय पुलिस को इसकी सूचना दी। सूचना मिलते ही गुरूर थाना पुलिस के अधिकारी और कर्मचारी मौके पर पहुंचे। मर्ग कायम कर मामले की गहन जांच की जा रही है।

बंधक बनाकर मारपीट और वाहन लूट मामले में दो गिरफ्तार

कबाड़ कारोबार की आड़ में दबंगई : मुख्य आरोपी अब्दुल सफीर का आपराधिक रिकॉर्ड, फरार साथियों की तलाश जारी

नई दृष्टिबिंदु / बिलासपुर

सिरगिट्टी थाना क्षेत्र में कबाड़ कारोबार को लेकर हुए विवाद में बंधक बनाकर मारपीट और वाहन लूट की वारदात को अंजाम देने वाले दो आरोपियों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने लूटा गया टाटा पिकअप वाहन भी बरामद कर लिया है।

पुलिस के अनुसार आरोपियों ने प्रार्थी के साले को कबाड़ी दुकान में बंधक बना लिया। उसके साथ मारपीट की और जान से मारने की धमकी दी। इसके बाद जबरन टाटा पिकअप वाहन पर कब्जा कर लिया। शिकायत मिलते ही सिरगिट्टी पुलिस ने तत्काल अपराध दर्ज कर दबिश दी।

गिरफ्तार आरोपी, एक का आपराधिक रिकॉर्ड : गिरफ्तार आरोपियों की पहचान मोहम्मद फिरोज और अब्दुल सफीर के रूप में हुई है। पुलिस रिकॉर्ड के मुताबिक अब्दुल सफीर का नाम पहले भी हत्या के प्रयास और आर्म्स एक्ट जैसे मामलों में सामने आ चुका है। वह इन मामलों में जेल भी जा चुका है। क्षेत्र में चर्चा है कि वह कबाड़ कारोबार से जुड़े कुछ लोगों को संरक्षण देने और अन्य कारोबारियों की एंट्री रोकने की कोशिशों में सक्रिय रहा है। हालांकि इन आरोपों की जांच जारी है और अंतिम निर्णय न्यायिक प्रक्रिया के अधीन रहेगा।

एसएसपी के निर्देश पर त्वरित कार्रवाई : एसएसपी रजनेश सिंह के निर्देश पर पुलिस ने त्वरित कार्रवाई की। दोनों आरोपियों को न्यायालय में पेश कर न्यायिक रिमांड पर जेल भेज दिया गया है। मामले में शामिल अन्य फरार आरोपियों की तलाश में पुलिस की टीमें लगातार दबिश दे रही हैं।

पुलिस ने कहा कि जिले में गुंडागर्दी, रंगदारी और संगठित अपराध करने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई जारी रहेगी।

"यह समाचार पत्र आलोक तिवारी द्वारा 80/बी, मैत्री विहार, राधिका नगर, सुपेला, भिलाई, जिला दुर्ग, (छत्तीसगढ़)-490023 से आलोक तिवारी की ओर से प्रकाशित की जाती है, जिसका संपादन आलोक तिवारी द्वारा किया जाता है तथा इसका मुद्रण समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स द्वारा प्लॉट नं. 339/6, गली नं. 02, पाटन, थाना उतई, दुर्ग, (छ.ग.)-491111 पर किया जाता है। (समाचार चयन के लिए PRP Act, 2023 के तहत संपादक जिम्मेदार है)। समस्त विवादों का निपटारा न्यायालयीन क्षेत्र दुर्ग होगा।" संपादक आलोक तिवारी, मो. 74154-69100